इकाई - तीन, पठन सामग्री - 1

खुलते अक्षर खिलते अंक

विष्णु चिंचालकर

कोई भी काम यदि खेल भावना से किया जाए तो वह बोझिल न लगते हुए आसान हो जाता है। छोटे बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति खेलने की होती है, यह बात ध्यान में रखते हुए खेल खेल में ही यदि कोई बात उसे समझाई जाए तो वह उसे आसानी से समझता हैं। बालक की शिक्षा में इसलिए ऐसे साधन महत्वपूर्ण होते हैं जिनके साथ खेला जाए।

चित्रकारी भी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम और साधन है। ये है भी रेखा, रंग और आकारों का खेल। खेल–खेल में ही आड़ी–तिरछी, टेढ़ी–मेढ़ी, सरल तथा घुमावदार रेखाओं से कई प्रकार के आकार बन जाते हैं रंगों के छींटे और धब्बे भी तो अजीबोग़रीब आकार बना लेते हैं। आसमान में बादलों के जमघट में या बिखराव में ऐसे ही आकार दिखाई देते हैं। शुरू में ये सारे बेमतलब से लगते हैं परंतु उन्हें गौर से देखते रहने पर धीरे धीरे उनमें परिचित शक्लें उभरने लगती हैं। वास्तव में वहॉं तो होते हैं, केवल धब्बे और बादलों के टुकड़े। शक्लें तो होती हैं देखने वालों के मस्तिष्क में। प्राकृतिक रूप से हर देखने वाले के अंदर मौजूद सुप्त चित्रकार उन्हें देखकर अपनी कल्पना से ये शक्लें या चित्र बनाता है। प्रकृति ने खूब सारी बातें, प्रवृत्तियॉं हमारे मस्तिष्क में दे रखी है। वे सारी सुप्तावस्था में होती हैं। हमारा बाहरी वातावरण, उसमें होने वाली प्रत्येक छोटी–बड़ी चीज़ उस प्रवृत्ति को जगाने, उकसाने का काम करती है। उसके उकसावे में हम किस तरह आते हैं, किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं यह निर्भर करता है हमारी संवेदनशीलता पर।

वातावरण में पाई जाने वाली बातों को देखकर, सुनकर, स्पर्श करके हमारे अंदर का सुप्त चित्रकार, गायक, नर्तक, कवि तथा वैज्ञानिक जाग उठता है और अपने–अपने ढंग से प्रेरणा पाता है। सही मायने में हमारा वातावरण तथा उसकी हर चीज़ हमारी शिक्षक होती है। वह अपने कार्यकलापों से हमारी जिज्ञासा जगाती है, हमारे चिंतन तथा कल्पना को चालना देती है। हमारी संवेदन क्षमता के अनुरूप हम जो अनुभव ग्रहण करके अपना निष्कर्ष निकालते हैं, वही हमारी सही दिशा है।

बालक केवल एक मिट्टी का लोंदा नहीं है जिस पर हमारी इच्छा के अनुरूप कोई आकार थोपें। उसके अंदर विद्यमान प्रवृत्ति को, उसके कार्यकलापों का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करके उसकी संवेदनशील क्षमता को पहचान कर उसका ही विकास स्वयं वह बालक किस प्रकार कर सके ऐसा वातावरण निर्माण करके हम उसे सहयोग दें। हमारी अनावश्यक दखलंदाजी से अवरोध निर्माण न करें, यही हमारी (पालकों तथा शिक्षकों की) भूमिका होनी चाहिए।

बालक के लिए तो सारा वातावरण ही एकदम नया होता है। हर चीज़ उसे अनूठी लगती है और स्वभाविक संवेदनशील प्रवृत्ति के कारण वह उसके प्रति आकर्षित होता है। बरसों से देखते रहने के कारण हमारी संवेदना शिथिल हो जाती है, इसलिए बालक की जिज्ञासा और हरकत हमें निरर्थक जान पड़ती है, और तब उसे सहयोग देने के बजाए हम उसे दबाने का प्रयास करते हैं।

खेल की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण खेल के दौरान ही उसे कई प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं। सुखद अनुभवों को वह दोहराता है। अपनी बात को नाचते–गाते हुए कहता है। किसी वस्तु को उछालना–फेंकना, दीवार पर कुरेदना, आड़–तिरछी कुरेदी हुई रेखाओं से बने निशानों को देखकर उल्लसित होना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इन हरकतों में किस प्रकार का अनुभव वह पा रहा है या किस भावना को व्यक्त कर रहा है, इसकी हमें तो ठीक से कल्पना नहीं होती। हमें तो दिखाई देती है, केवल बिगड़ी हुई ज़मीन और दीवारें। नज़र आती हैं उसकी बेमतलब की उछलकूद और बेहूदगी। ऐसी स्थिति में बजाए झल्लाने और नाराज होने के, निर्धारित स्थान तथा उचित सामग्री मुहैया करके इन हरकतों को सही ढंग से मोड़ भी दिया जा सकता है। ऑगन में ही रेती बिछाकर जहॉं किसी टहनी से लकीरें बनाता–बिगाड़ता रहे, चाहे फर्श पर कच्चे मिट्टी के रंगों से खेलता रहे। इस प्रकार के खेल में, अनजाने में बने विभिन्न आकारों से उसका परिचय हो जाता है। भले ही वह दिखाई न दे, परंतु उसके मस्तिष्क में तो अंकित हो ही जाता है। ऐसे समय में यदि हम उसे कोई विशिष्ट आकृति –जो हमारी समझ में आती हो–बनाने का आग्रह करें तो वह उसके प्रति दखलंदाजी होगी। इसके फलस्वरूप अपनी स्वयं प्रेरित मौलिकता खोकर नकल की प्रवृत्ति की शुरूआत होने की संभावना अधिक रहेगी, जो उसके सही विकास में बाधक बन सकती है।

मुहल्ले के बच्चे, साल–भर में चार–पाँच बार, गणेशोत्सव, होली या ऐसे ही उत्सव समारोह के लिए चंदा एकत्रित करने के लिए मेरे यहाँ आया–जाया करते। हर बार दरवाजे पर ही चंदे के पैसे उन्हें देकर मैं उन्हें बिदा कर देता। दरवाजे में खड़े–खड़े ही उनकी नजर मेरे कमरे की दीवारों पर टँगी या इधर–उधर बिखरी पड़ी अजीबो–गरीब चीजों पर पड़ती है जिन्हें देखकर उनकी नजरों में एक प्रकार का कौतूहल, जिज्ञासा झलकती । आपस में उनकी कानाफूसी चलती है, परंतु संकोच के कारण, भीतर घुसकर अपनी जिज्ञासा पूरी करने का साहस वे नहीं बटोर पाते। केवल दरवाजे से ही झाँकते–झाँकते चंदे के पैसे पल्ले पड़ते ही अधूरी जिज्ञासा लिए लौट जाते। उनकी इस अवस्था का मुझे अहसास होता पर मैंने न जाने क्यों उस पर कभी ध्यान नहीं दिया।

एक दिन की बात है– पाँच–सात बच्चों की टोली मेरे दरवाजे पर आ गई। आज वे चंदा बटोरने नही, एक मेहमान की तरह पधारे थे इसलिए केवल दरवाजे से ही उन्हें बिदा करने की बात नहीं थी। मैंने उनका स्वागत किया। उन्हें भीतर ले आया और उस मौके के अनुरूप उनकी आवभगत की।

बस, इतना काफी था। इतने दिनों की अधूरी जिज्ञासा पूरी होने का मौका उन्हें मिल गया। कमरे में प्रवेश पाते ही सब मेरी उन चीज़ों को बिलकुल निकट से देखने लगे। कुछ ने उन्हें टटोला भी, पूरे कमरे में वे फैल गए। उनकी जिज्ञासा और उत्साह देखकर स्वयं मैं भी उनके साथ घूमकर उन्हें अपनी चीज़ों के बारे में जानकारी देने लगा।

उस समय उनकी और मेरी स्थिति बिलकुल एक सी थी। हम में एक प्रकार की समानता थी। क्योंकि उनकी और मेरी अनुभूतियों में कोई खास फर्क नहीं था। वे पकौड़ियों में और बादलों में मुर्गा, शेर, हाथी वगैरा की शक्लें देखा करते और मैं अपनी फटी–पुरानी चीजों में पत्ते, टहनियॉं, लकड़ी की छिलपियॉं आदि बातों में अपनी मनचाही शक्लें देखा करता। संभवतः इसी कारण वे मेरी अपनी दुनिया में पूरी तरह घुल–मिल गए। घंटे–डेढ़–घंटे के बाद, जब पूरा चक्कर समाप्त हुआ तो पप्पू ने, जिसे उस टोली ने अपना मुखिया चुन लिया था धीरे से मुझसे पूछा हमें भी 'आप जैसे चित्र बनाना सिखाएँगे ?'

और सभी की प्रश्नवाचक नजरें मुझ पर जम गई। 'क्यों नहीं, जरूर सिखाऊँगा बच्चों, लेकिन तुम तो बनाते रहे होंगे ऐसे चित्र अपने स्कूलों में।'

'नहीं दादाजी, हम से शक्ल बनाना जमता ही नहीं। बड़ा कठिन सा लगता है।

'अरे इसमें कठिनाई किस बात की ? भई, तुम लिख लेते हो न ? जो लिख सकता है वह चित्र भी बना सकता है। लिखना भी तो चित्र बनाना है।

अचंभित होकर बच्चे मेरी ओर देखने लगे। शायद मेरा तर्क उनकी समझ में नहीं आया। पेन्सिल से कागज पर आकृतियॉ बनाकर ही उन्हें समझाना ठीक लगा।

लो, देखो–अ क र ट वगैरा–वगैरा क्या इन अक्षरों को पहचानते हो ? अच्छा, इन्हें लिख सकते हो ? और मैंने कागज उनके सामने सरका दिया।

अ क र ट अ क र ट *अ क र ट* *अ क र ट* **अ क र ट**

सबने अपने–अपने ढंग से चारों अक्षर लिखे। हरेक की लिखावट एक–दूसरे से अलग थी। किसी के भी अक्षर छुपे हुए अक्षर के समान नपे–तुले, घुमावों की मोटाई–पतलेपन से मेल नहीं खाते थे फिर भी वे पहचाने और पढ़े जाने लायक थे। इसी वास्तविकता को आधार बनाकर मैंने उन्हें समझाया कि बिलकुल छपे अक्षर के नापतौल समान होते हुए भी सारे के सारे अक्षर जिस प्रकार पहचाने जाते हैं, इन अक्षरों के द्वारा तुम्हें अपनी बात समझाने में कोई रूकावट नहीं आती। ठीक उसी प्रकार किसी भी वस्तु की चाहे वह आदमी हो,जानवर हो, पक्षी या पेड़–पौधा हो, उसकी शक्ल बनाकर अपनी बात समझाना कोई कठिन काम नहीं है। जिस प्रकार अक्षरों की खासियत समझकर तुम उसे अपने ढंग से लिखते हो वैसे ही जिस वस्तु की शक्ल बनानी हो उसकी खासियत

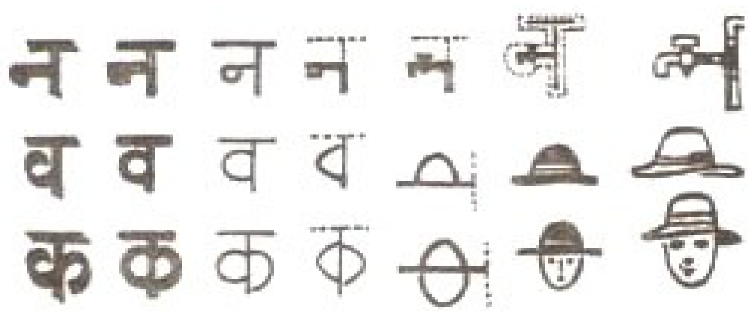

पकड़ में आ जाए तो बस वह बन भी जाएगी। अब एक तरकीब मैं बताता हूँ।

तुम कुछ अक्षर लिखो। मामूली से हेरफेर से एक चित्र उसी में से बन जाएगा। शायद तुम्हें पता तक न चले कि तुम चित्र बना रहे हो।

उदाहरण के लिए 'न' लिखों। अब देखों लिखा 'न' और चित्र बन गया एक नल का। जरा ध्यान से देखो, 'न' की बनावट में और नल की शक्ल में रेखा की कितनी समानता है। इसी कारण यह चित्र बन पाया, अब थोड़ा सा उसे ठीक–ठाक कर दें। अनचाही रेखाएँ मिटा दें और आवश्यक जोड़ दें तो चित्र अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

अब 'व' अक्षर को आड़ा या लेटाकर इस प्रकार देखों कि गोलाई ऊपर और मात्रा की रेखा नीचे आ जाए। माथे वाली रेखा चित्र के लिए आवश्यक है इसलिए इसे मिटा दो। कितनी आसानी से बन गया चित्र एक 'हेट' का।

इसी प्रकार यदि 'क' को आड़ा रखकर देखा जाए यानी एक गोलाकार ऊपर व दूसरा नीचे की ओर, मात्रा

की रेखा बीच में से आर–पार जाती हुई। इसकी भी माथे वाली रेखा मिटा दें और निचले गोलाई के ऊपर के हिस्से में दो बिंदु और एक खड़ी रेखा बना दे तो 'हेट' पहने हुए आदमी की शक्ल उभरने लगेगी।

क्यों, है न मजेदार बात ? चित्र बनाने का विशेष प्रयास न करते हुए भी केवल अक्षर लिखने पर ही अपने आप चित्र बन गया। मतलब चित्र का आवश्यक ढॉचा मिल गया। अब थोड़ा सा उसे ठीक–ठाक कर लिया जाए तो चित्र अधिक स्पष्ट बन सकता है।

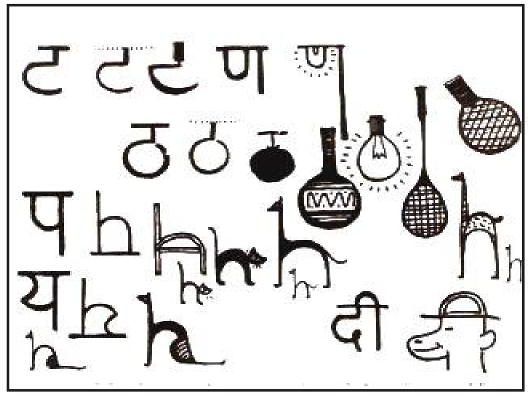

यह जो तरकीब अब तुम्हारे हाथ लगी है उसे कुछ दूसरे अक्षरों पर आजमाओ।

'ट' अक्षर में कुछ पहचान पाते हो ? ऊपर की आड़ी रेखा अनावश्यक समझ कर मिटा दो। फिर भी समझ में नहीं आया? अच्छा, कभी तुमने हॅसिया देखा है ? यह वह चीज है जिससे किसान गेहॅू की बाली काटता है। उसकी शक्ल में और इस अक्षर में कुछ समानता दिखती है ? लो अब मैं उसे, जरा स्पष्ट कर देता हूँ तो आ जाएगा एकदम समझ में।

दूसरा अक्षर देखो–ट के बाद आता है ठ। जरा इसके माथे की आड़ी रेखा मिटाओ।

एक मजे की बात है इस अक्षर में। अक्षर वही पर चित्र अलग–अलग। हाँ लिखावट में थोड़ा बहुत फर्क करना पड़ेगा। चित्र के बनते ही सब एक साथ चिल्ला उठे 'सुराही, बिजली का लट्टू, टेबल टेनिस की बैट, बैटमिंटन का रैकेट।' हाँ भई पहचान लिया।

अब यह अक्षर है 'ण' इसमें मैं थोड़ा सा अपनी ओर से कुछ मिलाता हूँ । देखना 'अरे, यह तो हुआ बिजली का खम्बा।'

'प' और 'य' में बहुत थोड़ा फर्क होता है–यानी लिखावट की दृष्टि से। केवल एक रेखा थोड़ी भीतर की ओर मुड़ी हुई। अब इनसे बनने वाले चित्र देखो। परंतु उसके पहले ये दोनों ही अक्षर उलटा देने होंगे। यानी सिर के बल। माथे की रेखा इनकी जमीन बन जाए इस प्रकार। अब इनसे बनने वाले चित्रों को देखो, पहचानो और समझो क्या–क्या फर्क किया गया है इसमें।

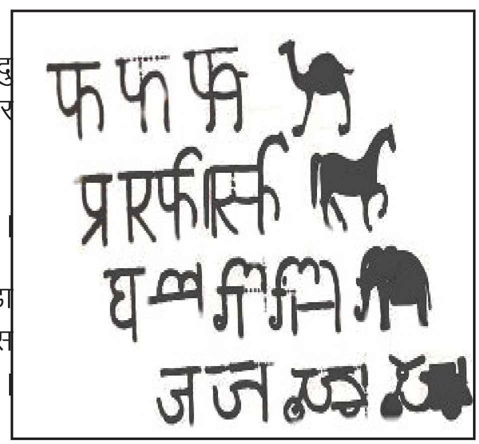

और ये लो यह मैंने बनाया अक्षर 'दी'। अब इसमें मैं दो बिंदु और छोटी सी रेखा लगाता हूॅ। और ये बन गए तुम्हारे दोस्त जो सिर पर टोप लगाए तुम्हारी तरह ही मुस्करा रहे हैं।

अरे वाह, आप भी हॅसने लगे। तो फिर 'प' पीछे छोड़कर आगे चलें।

'प' के बाद बारी आती है 'फ' की। वैसे 'प' और 'फ' में बहुत थोड़ा फर्क है जितना 'व' और 'क' में। अब जरा देखो मैं किस ढंग से इस अक्षर को लिखता हूँ। बिंदु वाला हिस्सा चित्र के लिए जरूरी नहीं है। इसलिए मिटा दो।

लो यह बन गया ढॉचा एक ऊॅट के चित्र का। अभी तक हमने केवल एक अक्षर द्वारा ही चित्र बनाए। अब की बार दो अक्षर मिलाकर देखेंगे। पहले लिखेंगे उलटा 'प्र' फिर उसी को चिपका कर 'फ'। इन दो अक्षरों के

मिलाने पर घोड़े के चित्र का ढाँचा मिल जाएगा।

ऊँट के बाद घोड़ा और अब आएगा हाथी ! उसके लिए पहले 'घ' अक्षर बनाकर उसे इस प्रकार रखो कि मात्रावाली रेखा जमीन पर आ जाए। फिर उसी रेखा के नीचे 'ग' अक्षर बनाओ 'घ' के माथे से लेकर एक घुमावदार रेखा इस प्रकार बनाओ कि वह 'ग' की मात्रा वाली रेखा के समांतर होकर उसकी सीध में आ जाए। दोनों खड़ी रेखा के मध्य से उसे जोड़ दें। अब इतना सब जुट जाने के बाद हाथी कहीं भाग ही नहीं सकता।

देखो, ऊँट, घोड़ा और हाथी इन तीनों पर सवारी करने के बाद अब मशीनी सवारी कर लें। जरा 'ज' बनाओ। और देखते जाओ कि किस तरह यह ज बहुत जल्दी ही स्कूटर में बदल जाता है। अब, भई, थोड़ा कठिन जरूर है पर तुम्हें तो मालूम है एक स्कूटर पाने के लिए लोगों को कितनी तिकड़मबाजी करनी पड़ती है, फिर भला उसका चित्र एकदम आसानी से कैसे बनेगा ?

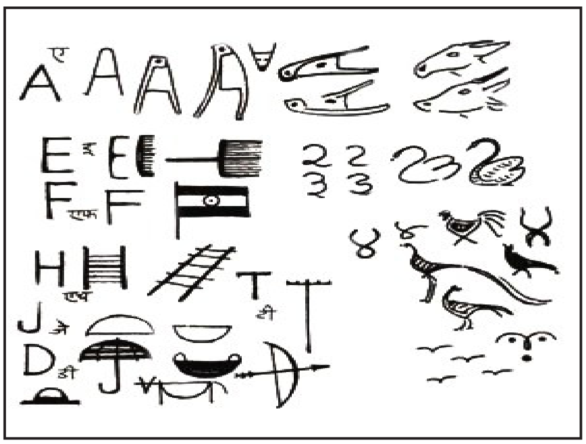

अभी तक हम लोग हिन्दी नागरी अक्षरों के साथ खेलते रहे और कई चित्रों के नमूने बनाए। मैंने हिन्दी अक्षर इसलिए लिए थे कि तुम उन्हें अच्छी तरह पहचानते हो। अब तुम्हें उन अक्षरों में चित्र देखने की तरकीब आ गई होगी। एक ही अक्षर में कई प्रकार के चित्र बन सकते हैं, वैसे ही एक ही चित्र कई अक्षरों में बन सकता है। जब तुम लगातार इस प्रकार खेलते रहोगे तो यह सब अपने आप ढूँढने लगोगे। अभी इस बार कुछ समय के लिए हम अँगरेजी अक्षरों के साथ और कुछ अंकों के साथ प्रयोग करेंगे।

अँगरेजी अक्षर भी बड़े सरल होते हैं। केवल कुछ सीधी तिरछी रेखाएँ और कुछ गोलाई से उन्हें बनाया जा सकता है। एक ही अक्षर में कई प्रकार के ढेर सारे चित्र बन सकते हैं। अब देखना मैं अक्षर लिखता जाऊँगा और चित्र बनते जाएँगे। तुम स्वयं ही पहचान लोगे, मुझे उसके बारे में कुछ अधिक कहने की जरूरत ही शायद नहीं पड़ेगी।

क्यों, है ना मजेदार बात ?

'स' से सरौता, 'ग' से गधा—ऐसा हम पढ़ते—रटते हैं पर यहाँ ए से ही यह सब बन गया न ? इसी तरह 2 और 3 के अंकों में इतना सुंदर हंस छिपा मिलेगा—क्या तुम्हें पता था ? अँगरेजी के ये अक्षर और हिन्दी के अंक कहीं झण्डा लहरा देंगे तो कहीं मुर्गा दौड़ा देंगे।

एक बात और ध्यान में रखो। एक ही अक्षर यदि उल्टा (यानी ऊपरी हिस्सा नीचे को और निचला हिस्सा ऊपर), मुँह फेरकर, एक दूसरे से चिपकाकर या आड़ा करके रख दिया जाए तो दूसरा ही अक्षर बन जाता है, यानी एक ही अक्षर में कई अक्षर बन जाते हैं। इसी कारण कोई भी चित्र किसी भी अक्षर से बनाना आसान होता है।

देखो इसमें खेलने के लिए कितनी अधिक गुंजाइश है। हाँ, तो अब अपना खेल शुरू करो, मैं कुछ बनाऊँगा, पहचानना तुमको है। इस बार मैं केवल चित्र ही बनाता रहूँगा। अब किन अक्षरों की सहायता से कौन सा चित्र बनाया है, यह पहचानना तुम्हारा काम है।

अँगरेजी अक्षरों के कुछ हिस्से, कुछ घुमाव आदि हिन्दी अक्षरों से बहुत कुछ मिलते—जुलते है। यदि उन्हें ही

कुछ घुमा–फिरा कर देखें तो वे पूरे के पूरे हिन्दी अक्षर बन जाते हैं। जैसे अॅंगरेजी B का मुॅंह पलट दो तो हिन्दी घ बन जाएगा, घ से व बन जाएगा, H में कुछ सुधार करने पर म भ ग स भी बन सकता है। तो R की खड़ी सीधी रेखा गायब करने पर र या R के गोलाई वाले हिस्से को आर–पार काटती हुई आड़ी रेखा बनाएॅं तो रि भी बन सकता है। F को घुमा देने से ग और इसी तरह G से ज बन जाएगा।

हम अंग्रेजी और हिन्दी अक्षरों के साथ इस प्रकार खेलते रहें तो इन सबमें काफी कुछ समानता दिखाई देने लगती है। भई, यही तो खेल में हर बार चित्र ही बनेंगे यह जरूरी नहीं है।

हमें मतलब भाषा से नहीं, उनके अक्षर और उन अक्षरों से बनने वाले आकारों से है जो चित्र बनाने में हमारे सहायक होते हों।

अब इसके बाद अपना जो खेल होगा वह इन मिले–जुले अक्षरों का ही होगा, यानी कभी विशुद्ध हिन्दी या अॅंगरेजी अक्षर, कभी इन दोनों को मिला कर तो कभी दोनों भाषा के अंको को भी इनमें शामिल करके एक मिलीजुली टीम बना कर खेलेंगे। अब उनमें कौन सा अक्षर या उनका कौन सा हिस्सा अपने काम आया यह पहचान कर ध्यान में रखना चाहिए।

अभी तक हमने अक्षरों को आधार मानकर चित्र बनाए हैं। ये सब हिन्दी और अॅंगरेजी अक्षर, और अंक भी एक–दूसरे से किसी न किसी रूप में बहुत मिलते–जुलते हैं, कारण जानते हो?

अक्षर या अंक जिन सरल या घुमावदार रेखाओं से बनते हैं उनकी रेखाओं के मोड़ बड़े ही सीमित होते हैं। कुल मिलाकर मोटे तौर पर इन सब घुमावों को केवल एक या दो इकाइयों में समेटा जा सकता है। इन्हीं इनी–गिनी इकाइयों को यदि ध्यान से याद किया जाए तो केवल उनके ही हेरफेर या जोड़तोड़ से सारे के सारे अक्षर और अंक बन सकते हैं। इतना ही नहीं, दुनिया भर की वस्तुओं के आकार भी इन्हीं इकाइयों द्वारा बनाए जा सकते हैं।

इसलिए अक्षर और चित्र में आकारों की समानता दिखते ही तुरन्त चित्र पहचानना आसान हो जाता है।

सीधे किसी वस्तु के चित्र बनाने की अपेक्षा परिचित मोड़ो का जमाने का तरीका सरल है।

इसलिए अक्षर और चित्र में आकारों की समानता दिखते ही तुरन्त चित्र पहचानना आसान हो जाता है।

सीधे किसी वस्तु के चित्र बनाने की अपेक्षा परिचित मोड़ों को जमाने का तरीका सरल है।

पहले हमने अक्षरों में किसी वस्तु का चित्र खोजने की कोशिश की थी। अब जिस चीज का चित्र बनाना हो

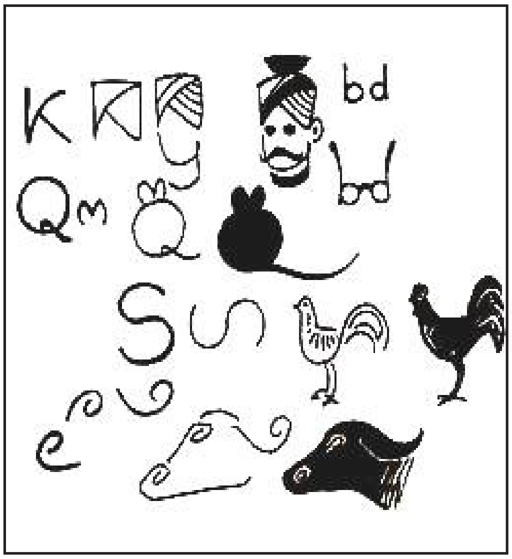

उसमें अक्षर या अंक का आकार ढूँढने की कोशिश करो और वह पकड़ में आते ही उसे ध्यान में रखकर, उसके सहारे, अलग उसी का चित्र बनाने का अभ्यास करो। शुरू में थोड़ी कठिनाई होगी। परन्तु अभ्यास के बाद यह आसान लगेगा।

कोई भी नई बात याद करना मेरे लिए एक मुसीबत थी। उन्हें याद करने की अलग–अलग तरकीबें मैं सोचा करता। उन्हीं में से एक यह भी थी कि, जो भी बात मुझे याद करनी होती उसकी कुछ न कुछ विशेषता मैं ऐसी बातों के साथ जोड़ देता जो पहले से ही मुझे अच्छी तरह से याद थीं। एक साथ चार–पाँच बातें। और उनके साथ कुछ खेल जमाना। इनमें से यदि एक भी ध्यान में आती तो उसके ही सहारे शेष रही बातें भी तुरंत एक साथ ध्यान में आ जातीं।

पाठ्य पुस्तकों की बड़ी–बड़ी और कठिन नामावलियाँ भी मैंनं ऐसी ही तुकबंदी की सहायता से याद की।

फिर नई बातों को ध्यान में रखने का डर जाता रहा। चित्र बनाते समय तुम्हें भी इसी प्रकार की कठिनाई आ सकती हैं मुझे भी आई थी। जिस चीज का (पक्षी, जानवर, मनुष्य या अन्य) चित्र बनाना हो उसकी विशेषता (यानी दिखाई देने वाला मुख्य आकार क्या होता है वह) एकदम पकड़ में नहीं आती और दूसरी ही छोटी–छोटी और बेकार की अथवा कम उपयोगी बातों की ओर ही ध्यान चला जाता है। ये फालतू बातें ही हमें उलझाती हैं और चित्र बनाने में बाधा डालती हैं। चित्र बन ही नहीं पाता। इसलिए पहले, तो जिसका चित्र बनाना हो उसे खूब अच्छी तरह से देखो, निहारो। उसके समूचे आकार को। उससे अच्छी तरह पहचान कर लो। इसमें कठिनाई आए तो अपनी तरकीब का प्रयोग करो।

समूचे आकार में या उसके किसी हिस्से में तुम जिसे खूब अच्छी तरह पहचानते हो ऐसा आकार ढूँढने का प्रयास करो।

पहचान का आकार मिलते ही उसके सहारे तुरंत पूरा चित्र बनाना आसान लगेगा। अभी तक अनेक चित्रों में इस बात को तुम अच्छी तरह से समझ गए होंगे।

मैं बनाना चाहता हूँ एक मोटर का चित्र। पहले मैंने मोटर को अच्छी तरह देखा और उसके समूचे आकार को एक परिचित आकार के साथ जोड़ा। जमीन से सरपट सीधी आड़ी रेखा, उस पर, इस छोर से उस छोर तक बनने वाली एक घुमावदार रेखा जो ॲगरेजी D से मिलता–जुलता आकार बनाती है। बस इसी D के सहारे मैंने अपनी मोटर का चित्र बना लिया। अब इसमें छोटी बातें नहीं दिखाई जाएँ तो भी भागती हुई या खड़ी हुई मोटर कार पहचानने में किसी को भी कठिनाई नहीं होगी।

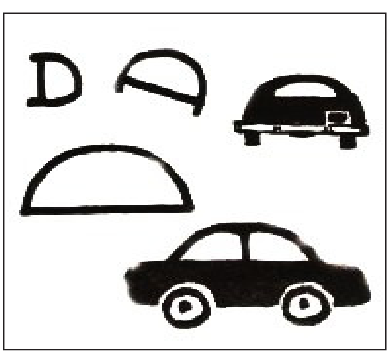

इसी प्रकार हिरण का चित्र बनाने में मैंने 'से' इस अक्षर का, सूअर के लिए 'या' तथा कुत्ते के लिये 7 और 4 इन अंकों का सहारा लिया। कहाॅ–कहाॅ और किस तरह से इन बातों का उपयोग किया वह देखो और इसी ढंग से अपनी खोजबीन शुरू करो।

पढ़ने वालों के लिए हरेक अक्षर, हरेक अंक कितने मतलब का और

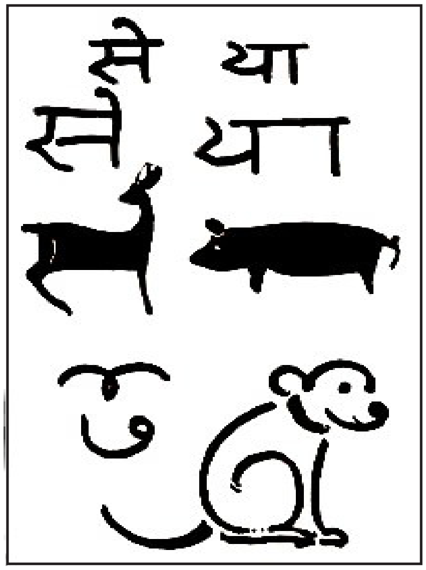

महत्वपूर्ण होता है। दुनिया भर के ज्ञान भंडार की चाबी उसमें होती है परंतु इससे भी एक कदम आगे बढ़ें तो एक नए दूसरे ही भंडार की चाबी भी आपके हाथ लग सकती है।

हम अक्षरों को केवल अक्षर, भाषा को लिखने वाला या शब्दों को बनाने वाला एक छोटा सा पुर्जा मानकर ही चलते हैं। इसके अलावा भी उसका कुछ आकार होता है, कुछ स्वरूप होता है इस बात की ओर कभी ध्यान ही नहीं दे पाते।

एकाएक तो यह सब दिखाई नहीं देता परंतु ध्यान से देखने पर उसमें छिपी हुई कई बातें, चित्र प्रकट होने लगते हैं। चित्रों का एक विचित्र खजाना हमारे हाथ लग जाता है।

अब देखो, मैं कुछ नहीं बताऊँगा, केवल अक्षरों को घुमा–फिरा रहा हूँ और ये क्या बोल रहे हैं–तुम सुन रहे हो न..?

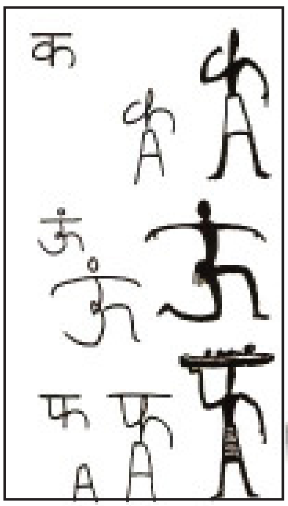

इसे सुनने लगो, देखने लगो तो फिर हिन्दी और अँगरेजी के अक्षर भी एक दूसरे के साथ आनंद से नाचते खेलते लगेंगे। यहाँ मैं ऐसे अक्षर चुन रहा हूँ जो बिल्कुल सरल हैं और उनकी बनावट कुछ इस प्रकार है जो, थोड़ा सा हेरफेर करते ही दोनों लिपियों के, हिन्दी और अँगरेजी के अक्षर बन जाते हैं। इन्हें तुम सीधी रेखाओं में लिख सकते हो। थोड़ी घुमावदार रेखाओं में भी कोई फर्क नहीं पड़ता । इन्हें पतली नोक वाली कलम से, मोटी नोक वाली कलम से या ब्रुश से ही लिखों और देखों कि N और Z या च क्या कवायद कर रहे हैं और A और N क्या ढोकर ले आए हैं ?

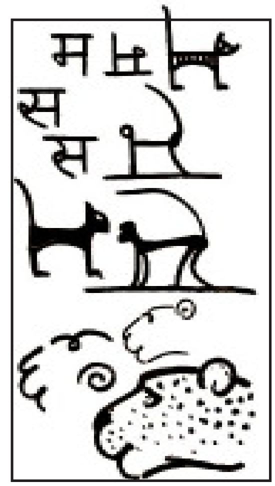

N का एक और करतब देखो। वह अक्षर धीरे–धीरे जब दूसरे अक्षर में बदल जाता है तो बिलकुल सिनेमा की फिल्म की याद आ जाती है।

पहले N को पलट दो। पलटने की सरल विधि मैं बताता हूँ : कागज पर पेन्सिल से लिखकर उस कागज को इस प्रकार मोड़ो कि कोरा हिस्सा लिखे हुए हिस्से पर आ जाए। फिर उस हिस्से को, पेन्सिल के उलटे सीरे से रगड़ो। मोड़ खोलने पर उलटा N छपा हुआ दिखेगा। यदि सरल मालूम हो तो इस विधि से या तुम अपने ढंग से N और Z को पलट दो और फिर देखो कि किस प्रकार धीरे–धीरे ये अक्षर क, ळ, फ, ज, S और 8 में बदल जाते हैं। और फिर इसमें कुर्सी–टेबल पर बैठे बाबू मिलेंगे, सरपट साइकिल भगाते सवार दिखेंगे और तरह–तरह से उछलते–कूदते खिलाड़ी भी मिलेंगे।

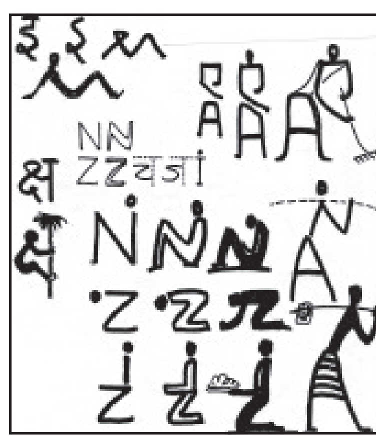

अब उसी जाति का दूसरा अक्षर लो–M देखना, यह अक्षर भी किस प्रकार अलग–अलग अंग्रेजी और हिन्दी, देवनागरी के अक्षरों में बदल जाता है।

इसके लिए मैं एक आसान तरकीब सुझाता हूँ–एक तार लो, इतना पतला और मुलायम कि जिसे आसानी से हाथ से मोड़ सको। फिर उसे M की शक्ल में मोड़ दो, अब एक सफेद कागज पर उसे सीधा, उलटा, आड़ा, तिरछा रखकर देखो, कई प्रकार के अक्षर दिखना शुरू हो जाएॅगे। अपनी ओर से कुछ रेखाएॅं उसके आगे, पीछे, नीचे, ऊपर बनाओ तो अक्षर और स्पष्ट होते जाएॅंगे।

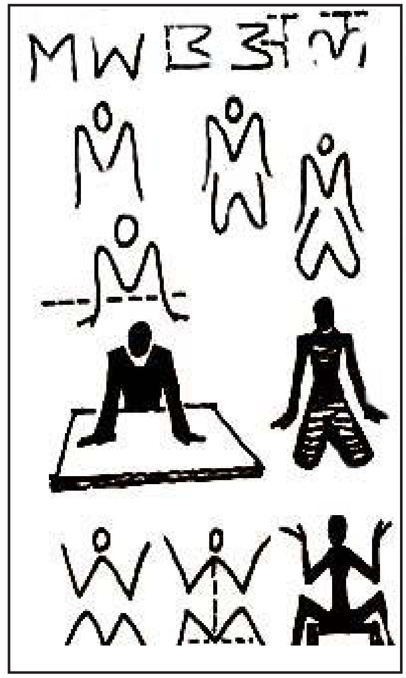

I और T तो बड़े सरल अक्षर हैं। ये हैं तो अंग्रेजी के, यानी रोमन लिपि के, पर ये दोनों ही अक्षर नागरी लिपि के हरेक अक्षर के साथ मिल जाएॅंगे। अनुस्वार की मात्रा के लिए ां और पाई की मात्रा के लिये ा। जैसे क +ा =का, ख + ा = खा। मूल अक्षर के रूप बदलने में इन मात्राओं की सहायता ली जाती है वैसे ही अधूरे चित्र को पूरा करने में भी। M...M+T= घ।

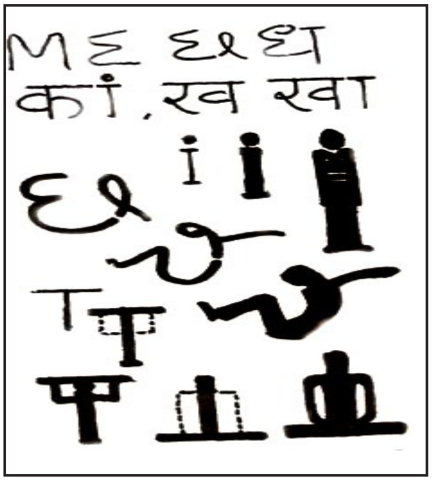

और देखो कि इसमें सावधान खड़े बच्चे से लेकर कुलटारी खाते बच्चे निकलेंगे और शांत समाधि में बैठे बाबाजी भी।

अक्षरों का भंडार इतना बड़ा है, इतना विचित्र है कि जितना खर्च करो उतना बढ़ता जाएगा। नए–नए चित्र बनते चले जाएँगे। चलो एक अंतिम सा अक्षर ए लो। इसे अलग ढंग से लिखता हूँ देखो। लिखावट बदलते ही कितने प्रकार के जाने–पहचाने आकार दिखाई देने लगे। इनकी सहायता से कई ॲंगरेजी और नागरी लिपि के अक्षर बन सकते हैं। यह अक्षर अपने आस–पास फैली हुई किन–किन बातों में दिखाई देता है इस पर भी जरा ध्यान देते रहना। तब तुम पाओगे कि साधारण सी लगने वाली एक रेखा भी उत्सव में, त्योहार में बदल जाती है।

अब हम लोग अपने खेल का तरीका कुछ बदलेंगे। अक्षरों से फिसलकर दूसरी जानी पहचानी चीजों पर आएँगे। इसका मतलब यह नहीं कि अक्षरों का पीछा छोड़ देंगे। अक्षर तो रहेंगे ही क्योंकि कोई भी चित्र, चाहे वह मनुष्य का हो, जानवर या अन्य प्राणी का, दूसरी किसी वस्तु का हो, अक्षरों से बन ही जाता है फिर एक अक्षर हो, एक से अधिक अक्षर हो या किसी अक्षर का छोटा–सा हिस्सा हो, अक्षर तो है ही। बदलेंगे केवल उसका क्रम यानी पहले हम अक्षर लेकर उसमें चित्र ढूँढेंगे और फिर उसके सहारे चित्र बनाएँगे।

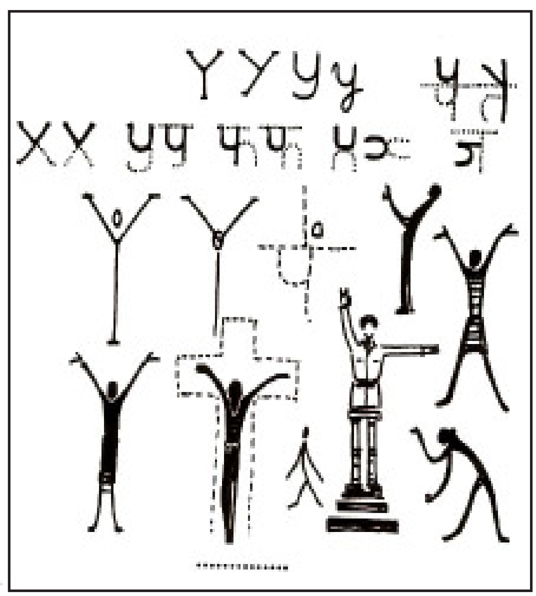

तो अब हम लोग पेड़ को ही लें। हरा–भरा, पत्तियों से लदा हुआ नहीं तो जिसकी सारी पत्तियाँ झड़ चुकी हों और जिसकी सब शाखाएँ और छोटी–छोटी टहनियाँ दिखाई देती हों ऐसा सूखा पेड़।

इसे तुम दिन में कई बार देखते होंगे पर अब उसे जरा अलग ढंग से देखने की कोशिश करना। मनुष्याकृति और पेड़ में बड़ी अजीब सी समानता दिखाई देगी। बस उलटा करके तो देखो। अक्षरों को उलटना आसान है, परंतु पेड़ को नहीं, यह मैं जानता हूँ इसलिए एक तरकीब सुझाता हूँ। ऑगन से या किसी गमले में से एक सूखा पौधा (वह भी तो छोटा पेड़–ही होता है) जड़ समेत उखाड़ लो। फिर मिट्टी साफ करके उसे उलट कर देखो।

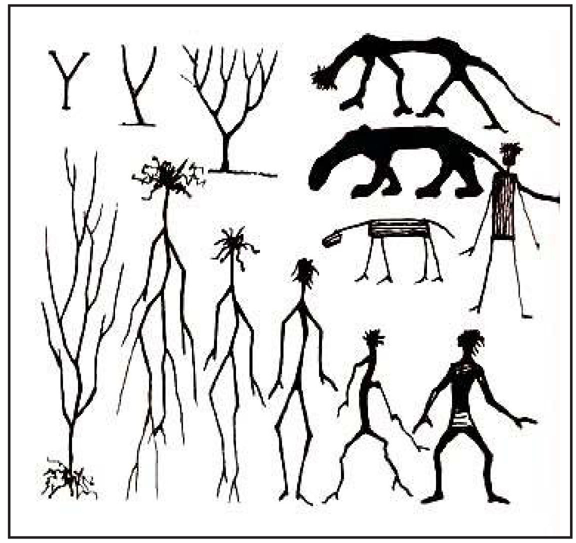

जड़ से लेकर तना और टहनियों तक की समानता देखो। अनावश्यक हिस्से निकाल कर छाँटते चलो। ध्यान से देखते चलो। अब तुम अकेले नहीं, तुम्हारे पास खड़े हैं कई तरह के साथी।

चित्र बनाने के लिए पेड़ में और मनुष्य की आकृति में क्या समानता है यह धीरे–धीरे समझ में आने लगता है। पेड़ का तना मनुष्य के धड़ जैसा होता है, शाखाएँ हाथ और पैर जैसी, तो जड़ें बालों जैसी दिखाई देने के कारण उसके आस–पास के हिस्से में अनायास चेहरे का आभास हो जाता है। चित्र बनाने के लिए, एक खाका खींचने के लिये बस, इतनी सामग्री पर्याप्त है। इनकी सहायता से मनुष्य के अलावा दूसरे प्राणियों का चित्र भी बनाया जा सकता है, केवल तने को लिटा दो। मनुष्य के चित्र लिए खड़ा तना तो दूसरे प्राणियों के लिये आड़ा तना। शाखाओं की रचना में थोड़ा फर्क करना होगा।

ॲगरेजी कैलेंडर के अनुसार पुराने वर्ष की बिदाई और नए वर्ष के स्वागत के दौर में ही आता है बड़े दिन का त्यौहार। दिसंबर के अंतिम सप्ताह भर यह उत्सव चलता है।

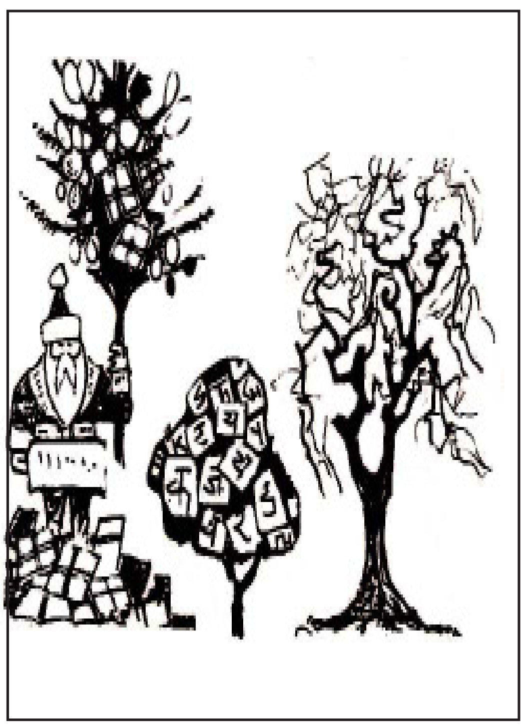

बड़ी धूमधाम के साथ यह मनाया जाता है। बिलकुल दिवाली की तरह। इस अवसर पर भी रोशनी, आतिशबाजी, हर घर में सजावट, खिलौने, मिठाइयाँ और तरह–तरह की भेंट आदि की रेलमपेल होती है। एक पेड़ (क्रिसमस–ट्री) पर तरह–तरह की भेंट की वस्तुएँ और खिलौने रोशनी के साथ सजाए जाते हैं। इन्हें बाद में बच्चों में बाँट दिया जाता है।

अच्छा यह बताओ, क्या तुम उसे बूढ़े 'डाकिए' को जानते हो जो बच्चों को अत्यधिक प्रिय है, कारण, वह बच्चों के लिए विशेष रूप से मनचाही भेंट और खिलौने लाता है। और कहते हैं, जब बच्चे सोते रहते हैं, उस समय चुपके से हर घर में बच्चों के लिए भेंट रख देता है जो बच्चों को इस पेड़ से मिल जाती है। बच्चों के लिए यह यह पेड़ मानों कल्पवृक्ष ही होता है।

हमारे पुराणों में लिखी हुई कथाओं के अनुसार कल्पवृक्ष वह पेड़ होता है, जिसके नीचे खड़े होकर की गई मनोकामना पूरी होती है। यह कल्पवृक्ष वास्तव में तो मैंने देखा नहीं, परन्तु मेरे

लिए और तुम्हारे लिए भी प्रत्येक वृक्ष कल्पवृक्ष है।

इसका कारण है कि हमें मन चाहे चित्र यह वृक्ष दे देता है। इसके नीचे खड़े होकर जिस चित्र की कामना करें, वही चित्र हमें मिल जाता है।

आओ, जरा पेड़ के नीचे खड़े होकर देखो हर शाखा में और छोटी–छोटी टहनियों में चित्र ही चित्र टँगे हुए हैं। जरा ध्यान से देखो। टहनियों के हर मोड़ में जिनकी कल्पना करो वही अक्षर या कम से कम उसका खास हिस्सा तुम्हें दिखाई देगा और एक बार अक्षर दिखाई दिया कि उसके द्वारा बनने वाला चित्र भी अपने–आप दिखाई देगा ही।

हम लोग चित्र बनाना शुरू करें उसके पूर्व मुझे एक बड़ा अच्छी ॲंगरेजी कहानी याद आई है। वह मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ।

एक था पेड़ और एक था बालक, दोनों बड़े अच्छे दोस्त थे। रोज वह बालक उस पेड़ के पास आता, उस पर चढ़ता, शाखाओं पर झूलता, पत्तियॉं बटोर कर उनका टोप बनाकर पहनता, फल खाता और खेलते–खेलते जब थक जाता तो उसी पेड़ की छॉंव में सो जाता। उसे इस प्रकार खेलता हुआ देखकर पेड़ को बड़ी खुशी होती है।

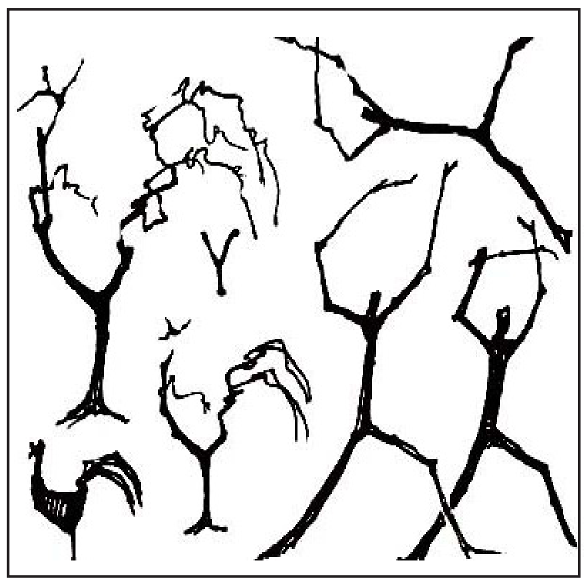

समय के साथ बालक बड़ा हो गया। धीरे–धीरे उसका पेड़ के पास आना लगभग बंद हो गया। अकेलेपन के कारण पेड़ दुःखी होने लगा। कई दिनों के बाद अचानक एक किशोर उस पेड़ के पास आया तो अपने पुराने दोस्त को पहचानते ही पेड़ बोला ''आओं बेटा, पहले जैसे खेलो, फल खाओ, झूला झूलो और मौज करो।''

''भई, तुम्हारे साथ खेलने और मौज करने के लिए मैं कोई छोटा बालक तो नहीं हूँ, अब मैं बड़ा हो गया हूँ। मुझे मजा करने के लिए दूसरी चीजें चाहिए। उन्हें खरीदने के लिये क्या तुम मुझे पैसे दे सकोंगे ? '' किशोर ने पूछा। ''बेटा, मेरे पास पैसे तो नहीं, केवल पत्तियाँ और फल हैं। इन्हें तोड़कर बेचने से तुम्हें पैसे मिल सकेंगे।'' पेड़ ने कहा।

किशोर ने पत्तियाँ और फल बटोरे और चला गया।

पेड मन ही मन खुश हुआ।

फिर कई वर्ष बीत गए। किशोर नहीं आया और बेचारा पेड़ अकेला ही दुःखी होता रहा।

एक दिन अचानक एक युवक उस पेड़ के नीचे आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही पेड़ खुशी से नाच उठा। इस बार उस युवक को आवश्यकता थी अपनी पत्नी और बच्चों के लिए किसी सहारे की। पेड़ ने अपनी शाखाएँ देकर कहा कि जाओ बेटा अपना घर बनवा लेना। शाखाएँ लेकर युवक चला गया और पेड़ खुश होकर उसे देखता रहा। इस प्रकार कई वर्ष बीत गए, फिर एक दिन एक अधेड़ उम्र वाला एक व्यक्ति पेड़ के पास रूका।

पेड़ क्या था केवल बचना हुआ तना ही तो था। फिर भी उसने उस अधेड़ को पहचान लिया और सदा की भाँति उसका स्वागत किया। इस बार वह अधेड़ व्यक्ति कहीं समुंदर पार सफर पर जाना चाहता था। और उसे आवश्यकता थी एक नाव की।

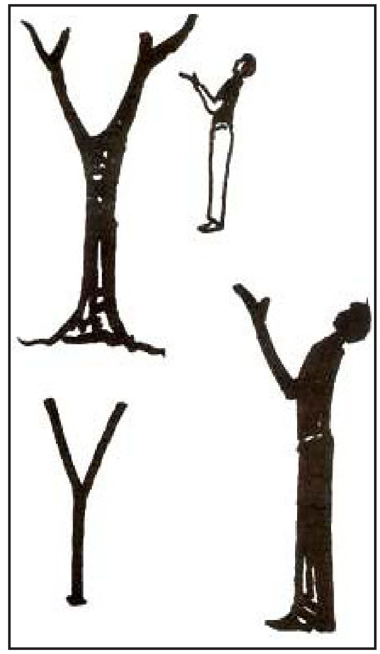

हमेशा की तरह बड़ी सहजता के साथ उस पेड़ ने अपना तना उसे सौंप दिया नाव बनाने के लिए।

वर्षो बाद एक लड़खड़ाता बूढ़ा उसी पुरानी जगह आया। अब पेड़ की जगह, एक छोटा–सा ठूँठ बचा था। फिर भी उसने बूढ़े को पहचान लिया। बूढ़े को देखकर उसे खुशी तो हुई, परंतु मन ही मन दुःख भी, क्योंकि इस बार उस बूढ़े को देने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं बचा था। वह कुछ बोल ही न सका। परंतु इस बार वह बूढ़ा कुछ नहीं चाहता था। उसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो चुकी थीं। अब तो वह ऐसे स्थान की खोज में था, जहाँ बैठकर आराम कर सके। उसकी यह इच्छा भी उस पेड़ के बचे हूए ठूँठ ने पूरी कर दी। उस ठूँठ पर टिककर वह बूढ़ा बैठ गया। बैठते ही उसे शांति का अनुभव हुआ।

मनुष्य की बचपन से बुढ़ापे तक की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति एक पेड़ किस प्रकार कर सकता है, इसकी कुछ कल्पना तो इस कहानी से तुम्हें हो गई होगी, परंतु जो बाते इस कहानी से तुम्हें हो गई होगी, परंतु जो बातें इस कहानी में तो नहीं कही गई हैं, वे भी पेड़ हमें किस प्रकार दे सकता है, यह तो मैं कहूँगा नहीं, लेकिन ये चित्र मेरी चुप्पी तोड़ देंगे।

पेड़ वाली कहानी तुम्हें पसंद आई न ? सूखे हुए पेड़ में दिखाई देने वाला मुर्गा और डंडे वाला आदमी भी तुमने पहचान ही लिया होगा।

इतना ही नहीं अब तो ऐसी कई आकृतियाँ याद आई होंगी जो रास्ते चलते, कई बार तुमने देखी होंगी। पत्तों से लदे हुए पेड़ में, कभी शाखाओं में, बरगद जैसे पेड़ों के तनों में तो कभी उनकी जड़ों में भी। ध्यान से यदि देखा जाए तो पेड़ का हर भाग, हर हिस्सा हमें कुछ चित्र या आकृतियाँ देता ही रहता है।

अभी तक हम लोग हिन्दी और अँगरेजी लिपियों के अक्षरों में आकृतियाँ ढूँढ़ते रहे और उनकी सहायता से चित्र बनाते रहे।

अब पेड़ के हर भाग से हम आकृतियाँ निकालेंगें और उनके द्वारा चित्र बनाएँगे परन्तु बारी–बारी से। अभी केवल तना और शाखाएँ। तो चलो। आकृतियाँ ढूँढ़ते समय उनमें दिखाई देने वाले अक्षरों को मत भूलना। देखो Y और र कितने अलग–अलग रूप में दिख रहे हैं।

सूखे हुए पेड़ या उनके ठूँठ, रास्ते चलते सड़क के किनारे, मैदान में या अपने मकान की छत से आमतौर पर दिखाई देते हैं। शायद इसी कारण हम उनके बारे में कभी सोच भी नहीं पाते। परंतु अब जरा उन्हें ही अलग ढंग से

देखना शुरु करो तो वे ठूँठ ही एकदम बदले हुए रूप में दिखाई देंगे। जैसे किसी चौराहे पर लगी हुई भव्य प्रतिमाएँ या म्यूजियम में रखी हुई शिल्पकृतियाँ।

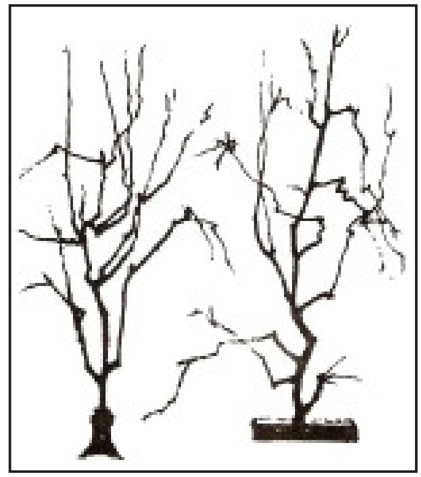

पतझड़ में पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं और उनकी शाखाएँ तथा छोटी–टहनियाँ साफ–साफ दिखाई देने लगती हैं। यही अवसर है कि जितनी चाहो उतनी आकृतियाँ और अक्षर देख लो।

रास्ते चलते कई चीजें समेटने की तो तुम्हें आदत होगी ही। इसलिए कुछ सूखी टहनियाँ जुटाना तुम्हारे लिए कठिन नहीं होगा। वे तो आसानी से घर के आँगन में या बगीचे की बागड़ में मिल सकेंगी। पर देखो वे इतनी छोटी तिनके जैसी हों कि आसानी से किसी बोतल के मुँह में या लकड़ी के छेद में भी इस प्रकार रखी जा सके कि छोटे से पेड़ जैसी दिखाई दे और कमरे को भी सजाए। फिर यदि उसे ऐसी जगह रखा जाए, जहाँ उसकी छाँव दीवार पर या फर्श पर पड़े तो अपने आप वहाँ पेड़ का चित्र बन जाएगा। उस टहनी को घुमाते चलें तो उसी बदलती छाँव में कई अलग–अलग चित्र बनते हुए दिखाई देंगे। चाहें तो मजे से उनमें अपनी मनचाही आकृतियॉं, अक्षर ढूँढे या नीचे कागज फैलाकर छाँव की उन रेखाओं पर पेन्सिल घुमाकर (ट्रेसिंग) पेड़ के चित्र बना लें। फुरसत के समय यह सिनेमा तुम्हारे लिए मनोरंजक तो होगा ही और चित्रकला सीखने में सहायक भी !

पौधों को उलटा करके देखने पर तुम भी चित्रों को पहचान लोगे। उनकी जड़ों को, जब वे गीली और मुलायम हों उस समय ही, ऐसा मोड़ दो कि सजे–सँवरे बालों जैसी दिखे। अनावश्यक हिस्सा काटकर उन्हें किसी ऐसी बोतल में रख दो। कुछ ऐसा लगें कि कुछ लोग बातचीत कर रहे हैं।

कभी इनके नीचे वाले सिरे को उँगलियों में पकड़ कर घुमाने पर इनकी छाया में आपकों नृत्य करती हुई आकृति भी दिखाई देगी।

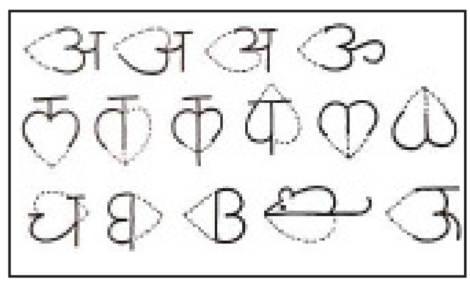

यदि हम हमारे ऑगन से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की ओर जरा ध्यान दें– जैसे पत्तियॉं, फल,फूल,सूखी टहनियां वगैरा, और उन्हें ठीक से देखें तो वे हमें कितनी सारी बातें बता सकती हैं। उदाहरण के लिए पीपल का एक पत्ता ही लीजिए। पत्ता, उसका डंठल टहनी से जुड़ा प्रत्यक्ष अ तुम्हारे सामने है। चित्र के साथ अक्षर के दृश्य रूप का मेल जम गया, और अक्षर के साथ ही चित्र बनाना भी आसान हो गया।

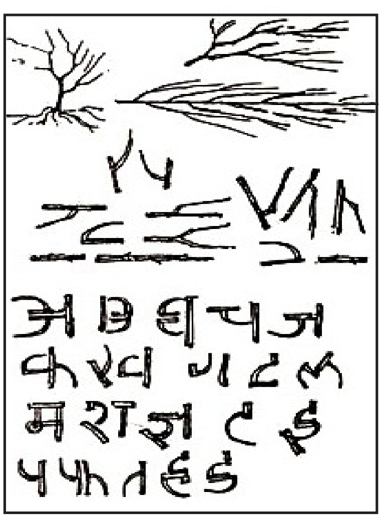

अब इसी प्रकार कुछ अलग–अलग प्रकार की पत्तियाँ और कुछ टहनियाँ जमा करो, उनकी सूरत–शक्ल, उनकी विशेषताओं को गौर से निहारते हुए उन्हें समझने की कोशिश करो।

ये हुए पीपल या उसके जैसी पत्तियों से मिलने वाले आकार और उनके द्वारा बने हुए कुछ अक्षरों के नमूने। इसी तरह अक्षरों मे पाए जाने वाले

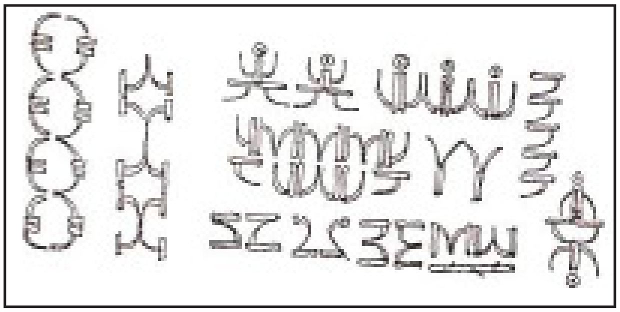

मुख्य आकार तथा उनकी विशेषताओं को समझकर अन्य पत्तियों में भी उन्हें खोजने का खेल हो सकता है।

अब जरा टहनियों को देखो। हमारे आँगन में ही सूखे हुए पोधों को उखाड़कर तथा बागड़ की कटाई–छँटाई से काफी सारी टहनियाँ हम जुटा सकते हैं। अरहर की डंडियाँ तथा सुबबूल की टहनियाँ अच्छी काम आ सकती हैं। जहाँ तक हो सके इनके समान आकार के टुकड़े काट लो। इस प्रकार विभिन्न आकार के टुकड़े बना लो ताकि खेलने के लिए सुविधा हो और इनकी जमावट से तरह–तरह के डिजाइन, चित्र तथा अक्षर बना सकें। सारे अक्षर केवल इन्हीं आकारों का प्रयोग करके बन सकते हैं। कुछ नमूने देखो जरा।

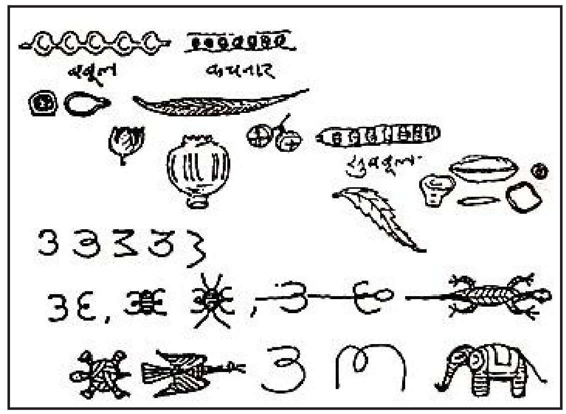

इस प्रकार अलग–अलग के टुकड़ों की जमावट का खेल भी तथा अक्षरों का ज्ञान भी।

अक्षरों के अलावा जमावट से भिन्न–भिन्न डिजाइनों की भी रचना खेल–खेल में हो सकती है। जमावट के द्वारा कई प्रकार के डिजाइन अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा बनाए जा सकते हैं। डिजाइन बनाते–बनाते अक्षर (हिन्दी और अँगरेजी के भी) बन जाते हैं तो अक्षरों की जमावट में डिजाइन। इसी तरह टहनियों के साथ बीज, फलियों तथा पत्तियों का प्रयोग और भी रोचक हो सकता है। इस बहाने अलग–अलग आकारों के बीज तथा फलियॉ खोजने का मन भी बनेगा।

अक्षरों और अंकों की गोद में बैठे चित्रों का यह अनोखा किस्सा अब हम समेटने की तैयारी में है। पर उससे पहले एक बात और। पाठशाला में, वर्णमाला सीखते समय तुमने पढ़ा होगा 'ग' गणपति का।

गणेशजी का नाम लेते ही सामने चित्र आता है हाथी जैसी शक्ल, सूपड़े जैसे बड़े कान, लम्बी सूँड केवल एक दॉत और बड़ा भारी पेट। ये हैं गणेशजी की विशेषताएँ और इन्हीं विशेषताओं के अनूरूप उनके नाम भी हैं – वक्रतुंड, महाकाय, लम्बोदर, एकदंत गजानन आदि आदि। इनमें से एक विशेषता का यानी सूँड का बोध 'ग' इस अक्षर में हो जाता है। और इसी कारण शायद 'ग' गणपति का माना गया होगा।

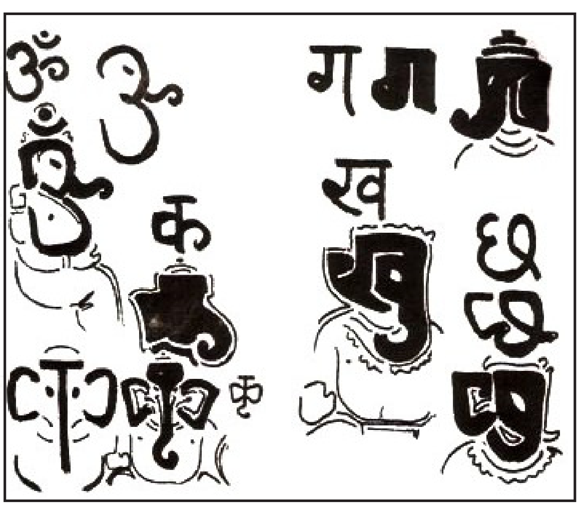

इन्हीं विशेषताओं का सहारा लेकर अब हम अक्षरों में छिपे हुए गणेशजी को ढूँढेंगें। और यह भी तुम जानते ही हो कि किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में गणेशजी की पूजा होती है, वैसे ही अधिकांश मंत्रोच्चारण भी 'ॐ' से ही शुरू होते हैं। क्योंकि ॐ अक्षर में भी गणेशजी विराजमान हैं। ध्यान से देखना।

आपकी सुविधा के लिए अब हमने कुछ ऐसे अक्षर चुने हैं। जिनमें गणेशजी की इन विशेषताओं की कुछ झलक दिखाई देती है जैसे :

ऊँ, क, ग, ख, छ, और ढ। नमूने के लिए अभी इतने काफी हैं।

खेल में अक्षरों को थोड़ा आड़ा–तिरछा करने तथा तोड़ने–मरोड़ने की छूट है। गणेशजी का केवल मस्तक का ही हिस्सा बनाया जाएगा, शेष हरेक की अपनी–अपनी कल्पना के अनुसार, क्योंकि भगवान शंकर ने भी गणेशजी का केवल मस्तक ही धड़ पर लगाया था।

'क' लिखो, 'ख' लिखो, चाहे 'ग' लिखो, अक्षरों के इस खेल में से गणेशजी प्रकट होते जा रहे हैं न ? इसलिए यह अंत नहीं इस काम का । यह शुरूआत है अक्षरों में, पेड़–पोधों में टहनियों में फूल–पत्तियों में चित्रों के विचित्र संसार को देखने की।

एक बार हमने इन चीजों में चित्र देखने का मन बना लिया तो फिर कहीं कोई 'विघ्न' नहीं आएगा। एक के बाद एक चित्र खुलते जाएँगे, खिलते जाएँगे।

मेरी अपनी दुनिया

विष्णु चिंचालकर

जी, कभी आप मेरे घर नहीं पधारे। आपने तो केवल सुन ही रखा है कि मेरा घर एक अजीब–सा कबाड खाना है। कई तरह का अटाला और ऊट–पटांग चीज़ें जहाँ–तहाँ बिखरी हुई आपको दिखाई देंगी वगैरह–वगैरह। वास्तव में, इसमें झूठ कुछ भी नहीं है। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसी कबाड–खाने में आपको कुछ दिलचस्प बातें भी दिखाई देंगी। इतना ही नहीं वे ऊट–पटांग चीज़ें आपका मनोरंजन भी करेंगी। और उन्हीं चीज़ों को घुमा–फिरा कर यदि मैं कुछ करतब कर दिखाऊँ तो आप अचम्भित भी हो सकते हैं। परन्तु हाँ, केवल मनोरंजन या अचम्भित करना ही मेरा इरादा नहीं है। उसके परे भी जो एक विचार है, दर्शन है उसे आप तक पहुँचाने के लिए ही यह सारी उधेड–बुन है।

वैसे इस कबाड–खाने में कोई भी परिचित या अजनबी आता है तो मेरे यह साथी (हाँ, अब वे सारी चीज़ें मेरे लिए निर्जीव अटाला नहीं बल्कि मेरे आस–पास फैले हुए सदैव मेरा साथ देने वाले साथी ही तो हैं) स्वयं ही अपना परिचय दे देते हैं। परन्तु उनकी कुछ छिपी हुई खूबियाँ विस्तारपूर्वक बताने में मैं ज़रा भी आनाकानी नहीं करता। मेरे इस उत्साह का मित्रों द्वारा मज़ाक भी उडाया जाता है। पर मैं हूँ कि बाज़ नहीं आता। कारण मेरी आन्तरिक इच्छा है कि उन वस्तुओं द्वारा जो सुखद अनुभूति मुझे हो पाई उसमें मित्र भी हिस्सा बँटाएँ और उनके अनछुए, नज़रअन्दाज़ किए गए पहलुओं की ओर मित्रों का ध्यान जाए। केवल किसी एक खामी के कारण वे तिरस्कृत न हों। अब मेरे इस प्रयास में मैं कहाँ तक सफल हो पाता हूँ इसका अन्दाज़ लगाना कठिन है क्योंकि सफलता तो निर्भर करती है दर्शकों की मानसिकता, उनकी संवेदनशीलता और क्रियान्वयन करने की क्षमता पर। परन्तु हाँ, मेरी आम की गुठली में बना चित्र देखने के बाद कोई व्यक्ति आम खाने के बाद गुठली फेंक देने के पूर्व रुक कर यदि एक क्षण के लिए भी उसे गौर से निहारे तो इसे मैं अपनी आंशिक सफलता मान सकता हूँ। परन्तु मेरी टूटी हुई चप्पल की मोनालिसा देखने के बाद अपनी टूटी चप्पल यदि कोई मेरे ही पास भेज दे तो फिर सिवाय माथा ठोक लेने के मैं कर भी क्या कता हूँ।

भई, यह तो आपकी नज़र है। हम कहाँ देख सकते हैं। अपने तो बूते की बात नहीं। इस प्रकार की दलील का मतलब प्रयास करने के झंझटों से छुटकारा।

नज़र और नज़रिया

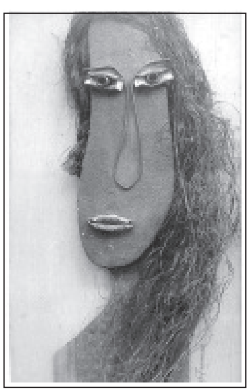

मैं तो हमेशा ही कहता हूँ कि इस प्रकार की नज़र केवल मेरी ही बपौती नहीं है। हर बच्चे के पास वह होती है, आपके पास भी है। एक तो उसकी जानकारी आपको नहीं है या उसे आज़माने का प्रयास आपने नहीं किया।

मैं वही बातें तो करता हूँ जो बचपन में एक बच्चा भी करता रहता है। जब वह पकौडी में मुर्गा या बतख की शक्लें देखकर माँ को दिखाने का प्रयास करता है तो उसे मिलती है चपत, और यदि मैं गुठली में सुअर या किसी साधु का चेहरा दिखाता हूँ तो मेरी नज़र की तारीफ होती है। यह भी कोई न्याय है? सडक पर या बगीचे में घूमते हुए अजीब–सी

लगने वाली चीज़ें, वह भी बटोरता है और मैं भी। क्या फर्क है? फर्क तो केवल इतना है कि उन्हीं चीज़ों को बडे भी समझ पाएँ, इस ढंग से उसे प्रस्तुत करने का तरीका। अब वयस्क होने के नाते मुझे इनाम तो नहीं मिलता। परन्तु हाँ, मेरी इन बचकानी हरकतों का मज़ाक अवश्य उडाया जाता रहा है।

हर बच्चे में, और इसीलिए हर व्यक्ति में यह नज़र प्रकृति ने दे रखी है। लेकिन इसका अहसास उसे नहीं होता और न कभी वह उसे जानने का प्रयास करता है। एक साधारण–सा उदाहरण लें।

कौन चित्रकार है?

जब दर्शकों को अपनी कृतियाँ दिखाता हूँ तो आमतौर पर उनकी एक ही प्रतिक्रिया मुझे दिखाई देती है। बादलों में तथा पानी के धब्बों के कारण या रंगों की परतें उखड जाने के कारण बिगडी हुई पुरानी दीवारों पर दिखाई देने वाले चित्रों की स्वीकारोक्ति। अब ज़रा गौर कीजिए, क्या वास्तव में वहाँ चित्र होते हैं? वहाँ तो होते हैं बादलों के कुछ टुकडे या पुंज और धब्बे। बस, हर व्यक्ति अपनी–अपनी कल्पना शक्ति के सहारे इस पुंज में से अपने मनचाहे और परिचित चित्रों का निर्माण कर लेता है। हर व्यक्ति के अन्दर विद्यमान जो एक छिपा हुआ चित्रकार होता है वही तो यह चित्र बनाता है। उस छिपे हुए चित्रकार को प्रकट होने के लिए आसमान के बादल या दीवारों के धब्बे बहाना मात्र हैं।

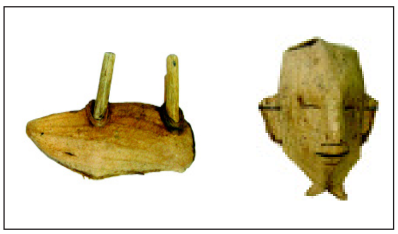

किसी चीज़ पर दूसरी चीज़ के टकराने से उसमें से आवाज़ निकलती है यह तो हम सब जानते हैं। यदि चीज़ ठोस होती है तो एक प्रकार की आवाज़ निकलेगी। धातु की हो तो भिन्न आवाज़ निकलेगी, मतलब जिस जाति की आवाज़ प्रकृति ने उसमें दे रखी है वही तो निकलेगी। परन्तु यह आवाज़ सुप्त रूप में छिपी हुई नाद या ध्वनि होती है। प्रकट होने के लिए बाहर की किसी टकराहट की आवश्यकता होती है। कहावत भी है, एक हाथ से ताली नहीं बजती। तो इस प्रकार की टकराहट के लिए और अन्दर की छिपी शक्तियों को प्रकट करने के लिए हमारे आस–पास के वातावरण की हरेक चीज़ तैयार है। बशर्ते उसे प्रतिसाद देने और संवाद स्थापित करने के लिए संवेदन क्षमता हो। वह तो अनेक कुप्रभावों के आवरण के नीचे दबकर शिथिल हो जाती है।

अज्ञान का लोन्दा बनाम स्वाभाविक विकास

बच्चे का दिमाग इस मायने में पूरा संवेदनक्षम होता है, कुप्रभावों से अछूता। परन्तु धीरे–धीरे वयस्कों के अनावश्यक दबावों के कारण संवेदनशीलता के कम होने का खतरा बना रहता है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि वयस्क, फिर वह पालक हो या शिक्षक अपनी बातें शिक्षा के रूप में बच्चों पर थोपते हैं, अपनी इच्छा या महत्वाकांक्षा के अनुरूप उन्हें ढालना चाहते हैं। और इस दबाव के कारण बच्चे की प्रवृत्ति बाहर उभरने की बजाय अन्दर ही दबकर रह जाती है। उसे प्रकट होने का अवसर ही नहीं मिलता और उसके स्वाभाविक विकास की गति रुक जाती है।

हमारी यह पक्की धारणा बन चुकी है कि बच्चे के रूप में प्रकृति ने एक अज्ञान का लोन्दा हमारे सुपुर्द किया है और उसे हमें आकार देना है। बिलकुल शुरू से ही एक विशिष्ट आकार देने की, उसमें ढालने की यह प्रक्रिया शुरू हो जाती है। मैंने तो यह पाया है कि सिखाने के प्रयास में कोई सीखता नहीं। वह तो सीखता है स्वयं के प्रयास से। उसके अन्तःप्रेरित प्रयास को आसान करने के लिए यदि हम केवल सहयोग दें तो सही ढंग से विकास होने की सम्भावना अधिक है।

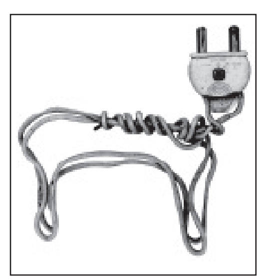

बच्चे की संवेदन क्षमता बनाए रखना, कल्पना शक्ति बढाने के लिए पूरा अवसर देना

और ऐसे अवसर निर्माण करना ताकि उसे प्रोत्साहन मिलता रहे, और अपने आस–पास के वातावरण के बारे में भी जागरूकता निर्माण करना, इसे मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ। इसीलिए जब भी मुझे कोई अपने बच्चे को सिखाने के लिए कहता है तो मेरा एक ही निवेदन होता है, भई, बच्चों का सिखाने की गुस्ताखी मैं नहीं करुँगा। उससे तो मैं खेलूँगा। उसके साथ खेलने पर वह खुद ही अपनी क्षमता के अनुरूप सीख लेगा।

प्रकृति, प्रकृति, प्रकृति

सिखाने की वास्तव में आवश्यकता है वयस्कों को। ताकि वे बच्चों की सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया में अनावश्यक दखलअन्दाज़ी न करें, बल्कि सहयोग दें। यह मेरा अपना अनुभव है। मैं भी तो खेलते–खेलते ही सीखा हूँ। जब मुझे एक गुरु ने कहा, टीचिंग इज़ चीटिंग, रियल टीचर इज़ नेचर। तो बात मुझे जँची और मैं प्रकृति की शरण में गया। धीरे–धीरे बात समझ में आने लगी। प्रकृति की इस पाठशाला में कोई भाषणबाज़ी नहीं है और न किसी विशेष बात को जानबूझ कर थोपने का प्रयास। वहाँ हर चीज़ में अपने–अपने तरीके से नियमित रूप से काम करते रहने का कार्यक्रम जारी रहता है। बस आप उसे निहारते रहें, उसे समझने का प्रयास करें, उसके साथ तन्मयता स्थापित करें। वह आपको कुछ–न–कुछ सोचने के लिए उकसाएगी और आपका सोचना शुरू हो जाएगा। आप प्रकृति में बिखरी हर चीज़ के साथ खेलें। उसके साथ रिश्ता जोडें –संवाद स्थापित करें। वह अपना सब कुछ आप पर न्यौछावर कर देगी। अपनी औकात के अनुसार आप बटोरते चलें, उसका भण्डार कभी खाली नहीं होगा।

हम अपनी ही बात देखें तो पता चलेगा कि प्रकृति को समझ लेने के प्रयास के कारण ही तो मानव प्रगति के इस पडाव तक पहुँच पाया है। वैज्ञानिक अपने तरीके से, चित्रकार अपने तरीके से तो अन्य विधा के धनी अपने–अपने तरीके से प्रकृति को समझने का प्रयास कर रहे हैं और प्रकृति भी अपना पूरा सहयोग दे रही है। प्रकृति और मानव के आपसी सहयोग से ही एक स्वस्थ विकास की सम्भावना है। सहयोग खेल भावना में ही मिल सकता है। यही वजह है कि मैं बच्चों के साथ खेलना चाहता हूँ। मुझे वह पुराना अँग्रेज़ी मुहावरा जँचता नहीं है, वर्क वाइल यू वर्क, प्ले वाइल यू प्ले, देट इज़ द वे टू बी हैप्पी एण्ड गे।

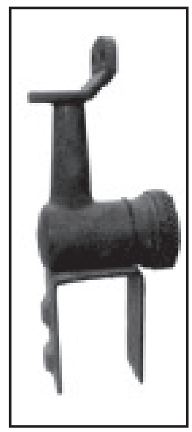

खेल के समय खेल और काम के समय काम, मतलब खेल और काम मानो परस्पर विरोधी बाते हैं। एक का दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। यानी हर बात में अलगाव। इसके विपरीत यदि इन दोनों का समन्वय करें तो? हर काम खेल भावना से क्यों न हो? इस तरीके से तो काम का उबाऊपन तथा उसकी बोझिलता कम होकर खेल–खेल में ही काम अपने आप हो जाए।

असीमित सम्भावनाएँ

मैं तो भई काम को इसी रूप में लेता हूँ। घर के आंगन में झाडू लगाना, कपडे धोना या ऐसा कोई भी काम जिससे कि हमारे बहुतेरे लोग जी कतराते हैं, करने में मुझे मज़ा ही आता है। हर काम की अपनी विशेषता होती है, उसका कोई धर्म होता है, हलचल में एक लयकारी होती है। उसे समझने और उसकी लय के साथ लय मिलाते ही वह काम आसान हो जाता है। काम के दौरान कई प्रकार के अनुभव मिलते रहते हैं और काफी कुछ सीखना हो जाता है। मेरे सारे चित्र इस प्रकार के खेल के परिणाम स्वरूप काम करते–करते ही बन पडे हैं। मैं तो खेलता रहा और चित्र अपने आप उभरते रहे। मेरा प्रयास केवल उन्हें खोजने का या थोडा–बहुत संवार कर दूसरों की अनुभूति के लिए प्रस्तुत करने का रहा। वह भी इतना संयमित कि उसका मूल स्वरूप नष्ट न होने पाए। दर्शकों को केवल इशारा मिल जाए ताकि अपनी कल्पनाशक्ति के द्वारा वे अन्य बातें भी खोज पाएँ।

आंगन में सफाई करते समय सूखी टहनियाँ, सूखे हुए पत्ते, फलियाँ, बीज, बेमतलब उगने वाली चीज़ें आदि

मेरा ध्यान खींचती रहीं। उन्हें निहारते–सहलाते हुए निकटता महसूस होने लगी और वे भी अपनी–अपनी विशेषताएँ, अपना आकार, बनावट, रंगों की छटाएँ जैसी बारीकियाँ प्रकट करने लगीं। यही तो उनकी भाषा है। उसे समझ लेने के प्रयास में ही बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया। और फिर पानी की बोतल साफ करते हुए उसमें की काई, रंगों की प्लेट–ब्रश, या टेबल की जमी धूल साफ करते समय कपडे के पोंछे पर फैले हुए धब्बे आदि चित्र की प्रेरणा देने लगे। घर की सफाई करने पर झाडू में घाघरा फैला कर नाचने वाली गुडिया का आभास हुआ, तो दीवार पर ही मकडी के जाले ने चिपक कर चित्र बना दिया। चप्पल टूटी तो मोनालिसा से मेल जम गया। तो दूसरी, पनिहारिन बनकर सामने आई। आम की गुठली में सुअर तो कभी कोई साधु–महात्मा दिखाई पडे। दूसरी में रवीन्द्रनाथ, कार्ल मार्क्स तथा आंइस्टीन की याद हो गई। कुर्सी की टूटी हुई पीठ के हिस्से में ध्यानस्थ योगी, फिर वह भगवान महावीर हो, बुद्ध हो, विनोबाजी या रामकृष्ण परमहंस के भी दर्शन होते रहे। पुरानी फटी हुई बनियान से बने ईसा मसीह को मुम्बई प्रदर्शनी में देखकर किसी दर्शक की प्रतिक्रिया बडी ही मार्के की रही। ईसा के एक वाक्य, मैं तो बस एक चिथडा हूँ। इससे अधिक कुछ नहीं। का उदाहरण देते हुए उस वाक्य को सार्थक रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय उन्होंने मुझे दे दिया।

जली हुई रोटी में बच्चे को दूध पिलाती माता के दिखने की बात कहूँ तो वो मेरी बचकानी हरकत लग सकती है। और बात है भी सही। फर्क केवल उसे संप्रेषित करने के तरीकों में है। अब यदि सच कहूँ तो कहाँ–कहाँ तक गिनती की जाए इन चित्रों की और उनके प्रेरणा स्रोतों की? हमारे आस–पास ही प्रकृति का अखूट भण्डार भरा पडा है पर उसे उलीचने की क्षमता सीमित है। इसी कारण तो हमें कई बातें बेकार और बेमतलब–सी लगती हैं। वास्तव में, वे बेमतलब की नहीं होतीं। हम या तो उनका मतलब नहीं समझ पाते या उन्हें मतलब देने लायक कल्पना शक्ति का हम में अभाव होता है। इस अभाव को दूर करने की दिशा में यदि प्रयास किया जाए तो कोई बात बेमतलब और बेकार नहीं लगेगी और उनके साथ एक नया रिश्ता जुड सकेगा। और यदि इन निर्जीव लगने वाली चीज़ों के साथ अपनेपन का रिश्ता जुड सकता है तो सजीव प्राणी के साथ तो जुड ही सकता है।

निर्जीव संसार से परे सौन्दर्य बोध

यह विचार मेरे मन में तब अधिक प्रबल हुआ जब मेरी मुलाकात बाबा आमटे से हुई। निर्जीव वस्तुओं के साथ खेलना आसान होता है, उनकी प्रतिकार शक्ति सजीव प्राणियों की प्रतिकार शक्ति के मुकाबले कम होती है। इसलिए उसे मनचाहे ढंग से ढाला जा सकता है। परन्तु मनुष्य के साथ यह बात इतनी आसान नहीं। बाबा ने यह कर दिखाया। कोढियों की मानसिकता में बदलाव लाकर और उनकी सुप्त अस्मिता जगाकर उनके द्वारा बडे–बडे निर्माण कार्य करवाए और वे भी सहज हँसते–खेलते।

पन्द्रह साल पूर्व जब पहली बार मैं उनसे मिला तो उन्होंने एक सवाल रखा, हम अजन्ता एलोरा जाते हैं और वहाँ भग्न, अवयव विहीन शिल्पों व चित्रों की हम सराहना करते नहीं अघाते। भग्न कलाकृतियों में भी सौन्दर्य खोजने वाला हमारा सौन्दर्य बोध क्या केवल चित्र, शिल्पों तक ही सीमित है? बिना किसी अपराध के जिसके अवयव झड चुके हैं, जो अपना रूप खो चुका है, ऐसे जीते–जागते हाड–मांस के मनुष्य को तिरस्कार की नज़र से देखते हुए हमारा सौन्दर्य बोध कहाँ लुप्त हो जाता है? चित्र, शिल्पों की खामियों को तो हम अपनी कल्पना से पूरी कर लेते हैं। उनके रख–रखाव का पूरा ख्याल रखते हैं। वहीं इन विद्रूप, अपाहिज, कुष्ठ रोगियों से डर कर दूर भागते

हैं। क्या उनकी क्षति को पूरा करने लायक कल्पना शक्ति हमारे पास नहीं है?

यही सवाल मेरे लिए एक सम्बल बन गया। मनुष्य में कितने सारे पहलू हो सकते हैं। केवल एक ही दृष्टिकोण से उसे परखना उसके साथ अन्याय हो सकता है। बुरे और अप्रिय पहलुओं को नज़रअन्दाज़ कर क्यों न अच्छे पहलुओं को अपनाएँ? किसी के केवल कुछ अंग झड जाने पर उसकी महत्ता समाप्त थोडे ही होती है। उसके अन्दर अन्य कई सम्भावनाएँ हो सकती हैं। उन्हें जगाकर क्यों न उसे उपयोगी बनाएँ?

मुझे निर्जीव, फटी पुरानी बनियान में ईसा दिखाई दिए तो बाबा की नज़र देखिए। वे कंधे पर हल ढोते हुए किसान में अपना क्रूस ढोने वाले ईसा मसीह को देखते हैं और श्रम करते हुए मज़दूर की पीठ पर पसीने की बहती धारा में उन्हें ईसा का क्रॉस दिखाई देता है। मेरी नज़र से खोजी हुई चीज़ तो कलाकृति बनती है और बाबा की नज़र से......... ?

हमने कला, सौन्दर्य या इसी प्रकार कई बातों को परिभाषित कर उसे एक सीमित दायरे में जकड दिया है। उस घेरे से बाहर निकलकर व्यापक रूप में सोचने को हम तैयार नहीं हैं। इस कारण हमारा सौन्दर्य बोध या कलाकृति की समझ उस व्याख्या के घेरे में ही सिमट कर रहेगी। पर मेरी अपनी निजी मान्यता इसके ठीक विपरीत है। मुझे तो अपनी कलाकृतियों की अपेक्षा बाबा द्वारा निर्मित की गई कलाकृतियाँ श्रेष्ठ जान पडती हैं। मेरा कितना सीमित दायरा, तो बाबा आमटे का इतना विशाल और व्यापक।

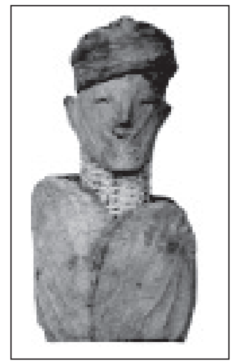

ओरीगेमी के बारे में

ओरीगेमी लगभग एक हजार वर्ष पुरानी कला है। यह जापानी शब्द 'ओरी' यानी मोड़ना और 'गेमी' यानी कागज़ से मिलकर बना है। पूरे शब्द का मतलब हो गया **कागज को मोड़ना**। कागज के मोड़ से अनेक रोचक व जटिल आकृतियॉ बनाई जा सकती हैं। इस कला में जो कुछ भी करना है कागज को मोड़कर ही करना है। मतलब यह कि कागज को काटना या चिपकाना नहीं है। इस मायने में क्राफ्ट और ओरीगेमी एक ही नहीं होते। ओरीगेमी की अब तक उपलब्ध पुस्तकों में कागज को यंत्रवत मोड़ने की विधि बताई जाती रही है। ये लेकिन विधियॉ पाठकों को नई तरह की आकृतियॉ बनाने के लिए उत्साहित नहीं कर पाती ओर न ही उनकी कल्पनाशीलता का कोई उपयोग हो पाता है। ओरीगेमी में छात्राध्यापकों की रूचि बढ़े, इसलिए इसे लिखा गया है।

ओरीगेमी में आमतौर पर वर्गाकार कागज का इस्तेमाल होता है। इस कला में प्रांरभिक भूमिका कुछ आधारों की होती है। एक ही आधार से बनने वाली विभिन्न आकृतियॉ दी गई हैं पहले आकृति को बनाने का पूरा तरीका बताया गया है। उसके बाद आकृति के साथ कुछ संकेत देकर सवाल दिए गए हैं। संकेतों की मदद से सवालों के जवाब तक का रास्ता आपको खुद ही तलाशना होगा । इससे आपको अपनी रचनाशीलता के उपयोग का मौका मिलेगा। यह कला महज़ खेल तक सीमित नही है। इसका दूसरा पहलू गणित का है। ओरीगेमी की समस्त विधियॉ गणित के सर्वमान्य सिद्धांतों पर आधारित हैं। दूनिया में लाखों बच्चे गणित के भय से स्कूल छोड़ देते हैं। चाहते है कुछ और करना, करने कुछ और लगते है। इसका मुख्य कारण है सामान्य स्तर पर गणित की अर्मूतता। 'नीरस विषय' और 'ऑकड़ों का मायाजाल' जैसे विशेषण भी उसके साथ जुड़े हैं। हकीकत यह है कि गणित किसी भी विषय से कहीं अधिक मूर्त और जीवन के ज्यादा करीब है, सुन्दर है। कोई भी वस्तु चाहे वह मानव निर्मित हो अथवा कुदरती उसमें कुछ न कुछ गणित है । पेड़, पौधे, संगीत, घर सबमें गणित है। परंतु हम जो गणित सीखते हैं वह जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग तक ही सीमित है। हम अपने सामान्य जीवन से गणित को नहीं जोड़ पाते ओरेगेमी के सभी खेलों के पीछे गणित का कोई न कोई सिद्धांत या क्रिया है। इन सिद्धांतों को ओरीगेमी के जरिए सहजता से बताया जा सकता है। ओरीगेमी में पानी गेंद एक लोकप्रिय आकृति है। साथ ही पानी गेंद आधार भी ओरीगेमी करने वालों के लिए जाना पहचाना है। इस पुस्तक में इस आधार को ही हमने नए–नए आकार देने की कोशिश की है। सामान्यतः यह धारणा है कि कागज़ के खिलौने बनाने की पुस्तकें उबाऊ होती है जिनके प्रति पाठक अपना रूझान नहीं बना पाता । जबकि इन्हीं खिलौनों को यदि वह प्रत्यक्ष बनते हुए देखता है तो खुद भी करने को उत्सुक हो जाता है। इस तरह यह बात समझ में आती है कि पाठक सांकेतिक भाषा के प्रति खुद को असहाय महसूस करता है। इसलिए शुरू में ही संकेतों को अच्छे से जान–समझ लेने के लिए कुछ जरूरी बातें दिये गये हैं। आगे बढ़ने से पहले हर छात्राध्यापक से हमारा अनुरोध है कि इन संकेतों से अच्छी तरह से वाकिफ हो लें। हर कला का अपना एक अनुशासन होता है जिसके तहत वह निखरती है। ओरीगेमी का भी अपना एक आंतरिक अनुशासन है जिसे मानने पर हम इसे सरल बना सकते हैं। इस अनुशासन के मुख्यतः दो सोपान हैं। पहला यह कि प्रत्येक चरण (वर्ग, आयत, कोण, भुजा और कर्ण) को मोड़कर आधा करना तथा दूसरा समरूपता बनाए रखना। आशय यह है कि यह एक सीमित कला है। संभव है हर नया मोड़ और समरूपता आपकी आकृति को नया आकार प्रदान करेगा।

रविंद्र केसकर

''एक आधार अनेक आकार'' ओरीगेमी की किताब जिसके प्रस्तुत करता रविंद्र केसकर है, एकलव्य, भोपाल द्वारा प्रकाशित पुस्तक से लिया गया है।

कुछ जरूरी बातें

ओरीगेमी में वर्गाकार कागज का इस्तेमाल होता है। वर्गाकार कागज काटना तो तुम्हें आता ही होगा। किसी आयताकार कागज से वर्गाकार कागज ऐसे काटा जाता है–

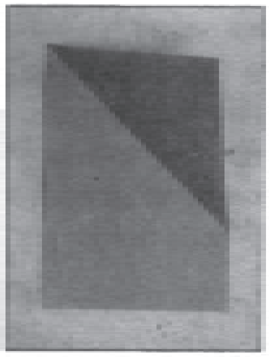

1. कोई आयताकार कागज ले लो।

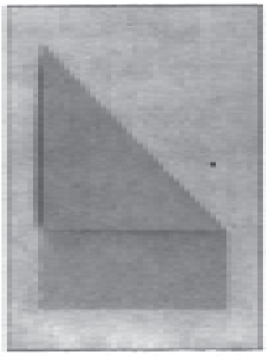

2. एक कोने से ऐसा मोड़ बनाओ की सामने की भुजाएँ एक दूसरे पर ठीक–ठीक बैठ जाएँ।

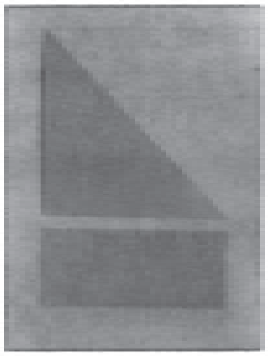

3. एक त्रिभुज पर दूसरा त्रिभुज पूरी तरह बैठ गया। नीचे बची पट्टी को काटकर निकाल लो।

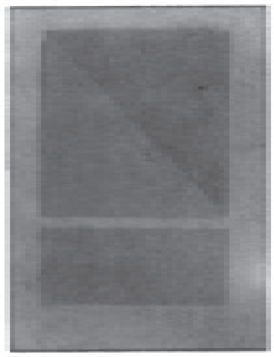

4. त्रिभुजाकार हिस्से को खोल लो। तुम्हारा वर्ग तैयार है। भुजाएँ मापकर इसकी जॉच कर लो।

वर्ग की जाँच

किसी वर्गाकार कागज़ के आमने–सामने के कोने एक दूसरे पर रखने से जो मोड़ बनेगा, बाकी बचे हुए कोनों से होकर गुज़रेगा । किनारे एक दूसरे पर फिट बैठेंगे। अगर किनारे ठीक–ठीक एक दूसरे पर नहीं बैठते तो इसका मतलब है कि वर्ग सही नहीं है। यह तो हुई जाँच की बात।

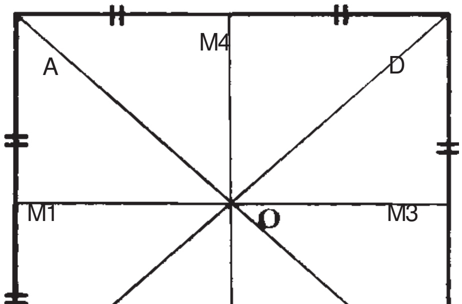

किस तरह का कागज़ हो ?

कोई भी कागज़ जिसे तुम आसानी से मोड़ सको। न एकदम पतला हो (मिठाइयों की पन्नी) और न ही एकदम मोटा (जूते के डिब्बे) । पतले कागज़ के तौर पर तुम कॉपी का पन्ना तथा मोटे कागज़ के रूप में पोस्टकार्ड का इस्तेमाल कर सकते हो।

वर्ग के चारों कोनों का नामकरण कर लो। हो सके तो किनारों के मध्य बिन्दु और वर्ग के केन्द्र बिन्दु को भी नाम दे दो।

जिस सतह पर मोड़ बनाने का संकेत दिया हो उसी सतह पर मोड़ बनाओ। आगे के पन्नों में संकेत दिए हुए हैं। इन्हें ठीक से पहचानकर अभ्यास कर लो। ऐसे संकेत हर चित्र के साथ होंगे।

कागज़ मोड़ने के लिए सख्त सतह का ही इस्तेमाल करो।

मोड़ पक्के बनाने के लिए हथेली या उँगली का इस्तेमाल न करके। अँगूठे के नाखून का उपयोग करो। (देखो चित्र)

हर मॉडल को बनाने में चित्रों का एक क्रम है। यह क्रम 1,2,3...... के रूप में दिया गया है । इसी क्रम से चलना होगा। जितने जरूरी संकेत हैं उतना ही आवश्यक है आधार । इसलिए आधार बनाने और उसे अलग–अलग तरीके से मोड़ने का अभ्यास भी आरम्भ में ही तुम्हें कर लेना चाहिए।

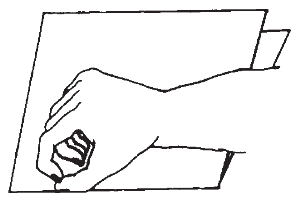

चित्रों के नीचे जो लिखा है उसे ध्यान से पढ़ लो। पहली ही कोशिश में मॉडल नहीं बन पाए तो हताश मत हो जाना। हर कदम और संकेत पर गौर करो और आगे बढ़ों । एक बार के बाद फिर कोशिश करो.......फिर कोशिश करो.....तुम्हें सफलता जरूर मिलेगी।

संकेत

1. खाई मोड़

यह मोड़ अन्दर की तरफ धँसा हुआ होता है। इसलिए इसे खाई मोड़ कहते हैं।

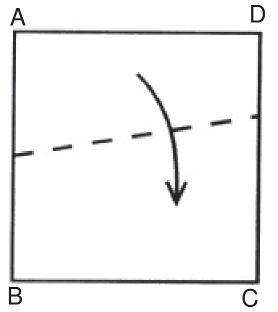

1क. कागज के एड किनारे को तीर की दिशा में मोड़ो।

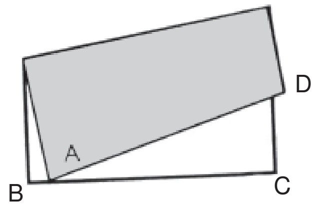

1ख. ऐसी आकृति बनेगी।

2. खाई मोड़ बनाकर खोल लो

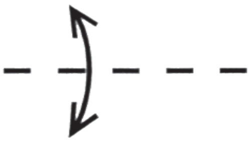

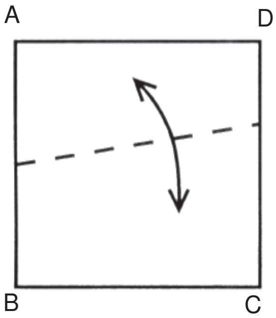

2 क. कागज़ की A D भुजा को नीचे की ओर मोड़ो।

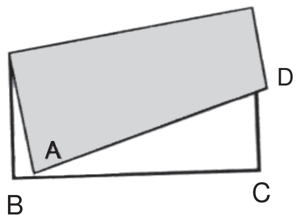

2 ख. ऐसे......

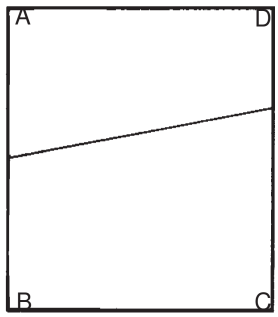

2 ग. मोड़ को खोल लो। चित्र पर हल्की रेखा दिख रही है। यही है खाई मोड़।

3. पहाड़ी मोड़

या

यह मोड़ उभरा हुआ है इसलिए इसे पहाड़ी मोड़ कहते हैं। कागज़ को पलट दो तो यही मोड़ दूसरी ओर खाई मोड़ हो जाएगा । चूँकि खाई मोड़ बनाना आसान होता है इसलिए पहाड़ी मोड़ बनाने के लिए कागज़ को पलटकर खाई मोड़ बना लेते हैं।

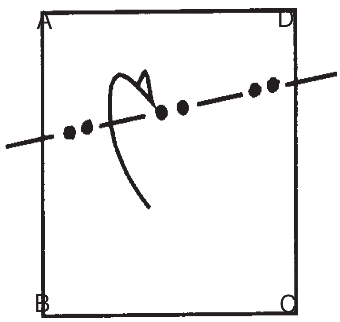

3 क. कागज को उलटी दिशा में मोड़ दो।

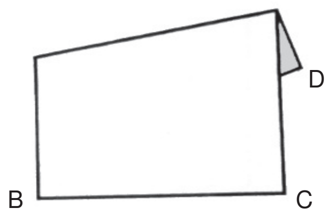

3 ख. कागज़ का ऊपरी हिस्सा पीछे चला गया।

4. दोहराना

जैसा पहले हिस्से पर किया है वही प्रक्रिया दूसरे हिस्से पर भी दोहराओ।

(अ) एक बार

(ब) दो बार

(स) तीन बार

तीर पर जितनी खड़ी रेखाएँ हों प्रक्रिया को उतनी बार दोहराना होता है।

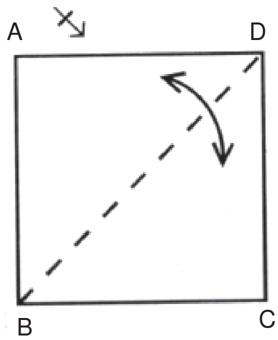

4 क. A कोने को C पर रखकर मोड़ो और खोल लो। यही प्रक्रिया दूसरे कोने पर भी दोहराओ।

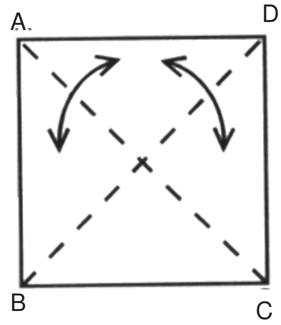

4 ख. AC और BD कर्ण बनेंगे।

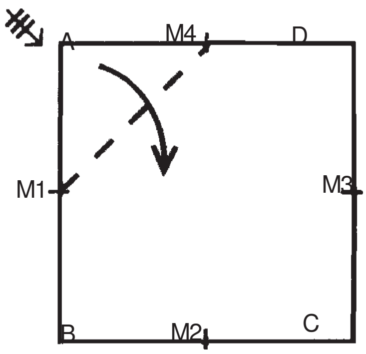

4 ग. कागज के A कोने को तीर की दिशा में मोड़ दो। बाकी तीन कोनों पर भी यह प्रक्रिया दोहराओ।

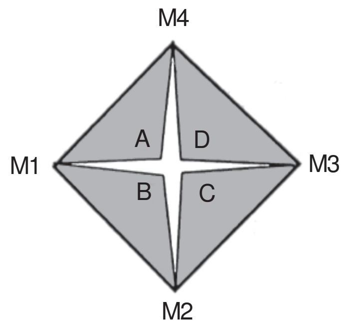

4 घ. ऐसी आकृति बन जाएगी।

5. आकृति को पलटना

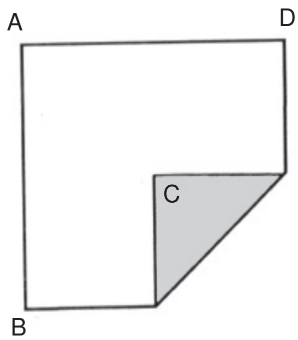

5 क. कागज़ के एक कोने C को मोड़ो। अब कागज को पलटो।

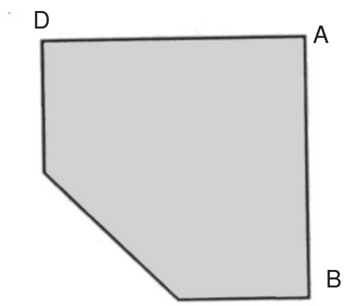

5 ख. पलटने के बाद कोना नीचे दब गया है। रंगीन सतह सामने आ गई।

6. एक हिस्सा दूसरे के बराबर है

$AA_1 = A_1A_2 = A_2o$

6 क. एक रेखाखंड तीन बराबर हिस्से में बँटा है।

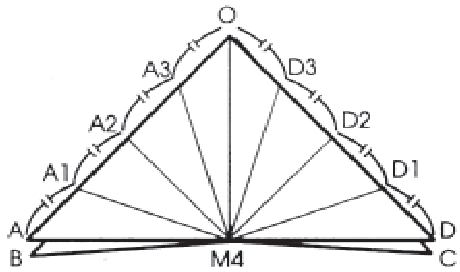

$AA_1 = A_1A_2 = A_2A_3 = A_30 = OD_3 = D_3D_2 = D_2D_1 = D_1D$

6 ख. एक त्रिभुजाकार आकृति की सामने की दोनों ओर की भुजाएँ चार–चार बराबर भागों में बँटी हैं।

7. एक्स–रे नज़ारा
(नीचे दबे हुए हिस्से को बताना)

एक्स–रे के बारे में तो तुम जानते ही होंगे। इसकी मदद से हम शरीर के भीतर की स्थिति का भी पता लगा लेते हैं। इस संकेत के जरिए हम आकृति के पीछे या भीतर दबे हिस्से को बताएँगे।

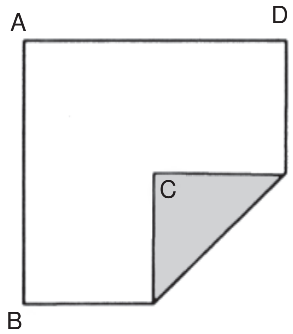

7 क. वर्गाकार कागज़ का एक कोना मुड़ा हुआ है।

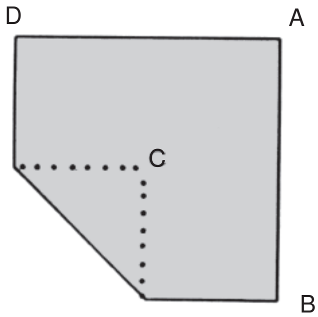

7 ख. पलटने के बाद कोना नीचे दब गया।

8. हवा भरकर फुलाना

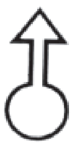

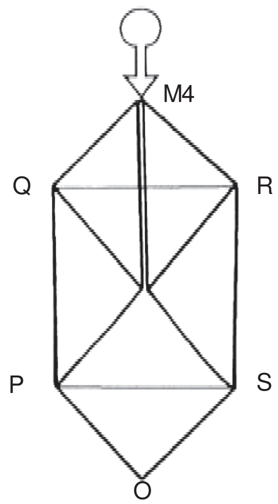

8 क. पिचकी हुई आकृति के सुराख से फूँककर हवा भरो।

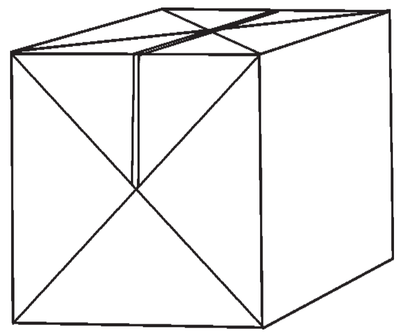

8 ख. फूली हुई आकृति।

9 चोच बनाना या उलटा मोड़ना

जिससतह पर काम करना है उस पर पहले खाई या पहाड़ी मोड़ बना लो।

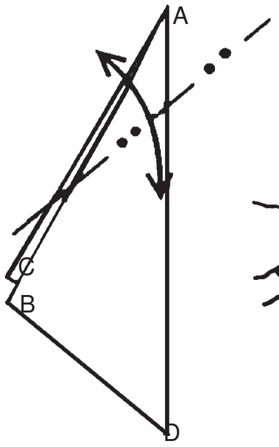

9 क. मोड़कर खोलो।

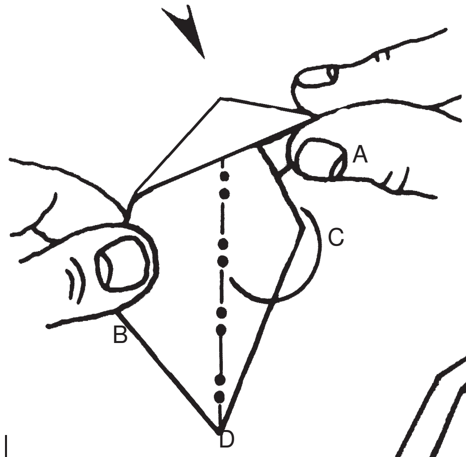

9 ख. मोड़े गए हिस्से को उलट लो।

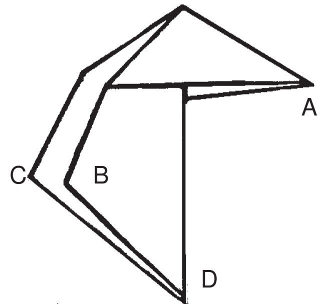

9 ग. चोंच बन गई।

10 . डुबाना

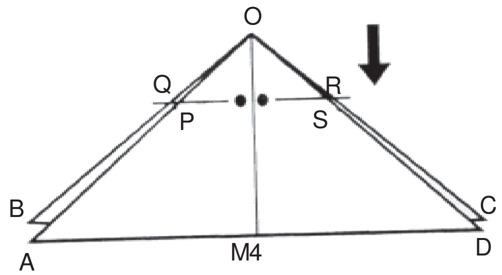

10 क. आकृति के शीर्श को मोड़कर अन्दर की तरफ डुबा दो।

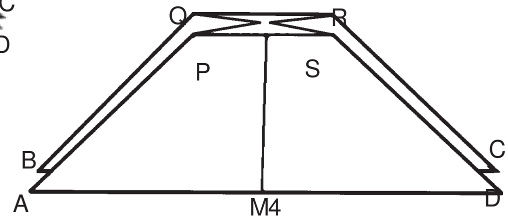

10 ख. ऐसी आकृति दिखेगी ।

11 चपटा करना

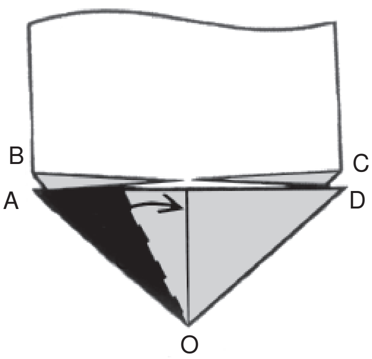

11 क. छायांकित हिस्से को मोड़कर खोलो।

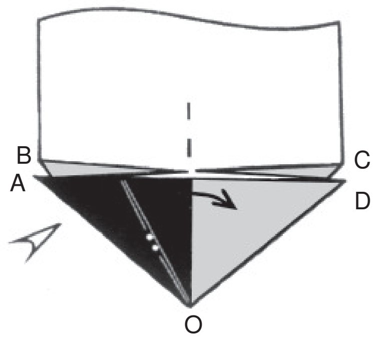

11 ख. खाई मोड़ से A सतह को खड़ा कर लो। अब इसे चपटा कर लो।

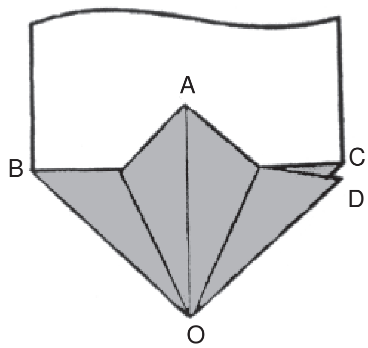

11 ग. ऐसी आकृति बन जाएगी।

पानी गेंद आधार

एक वर्गाकार काग़ज लो। कागज एक तरफ रंगीन और दूसरी तरफ सादा हो। वैसे तुम अपना मनपसंद कागज चुन सकते हो।

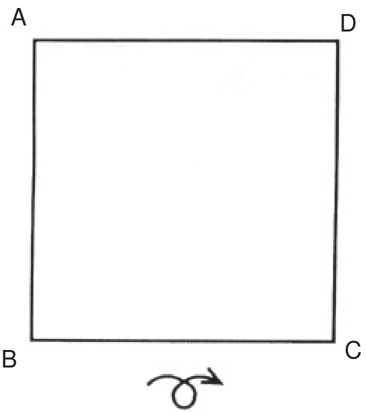

1. कागज़ के चारों कोनों का नामकरण कर लो A , B,C, और D । कागज को पलट लो। कोनों के नाम ध्यान रहें। अब उनका क्रम बदल जाएगा।

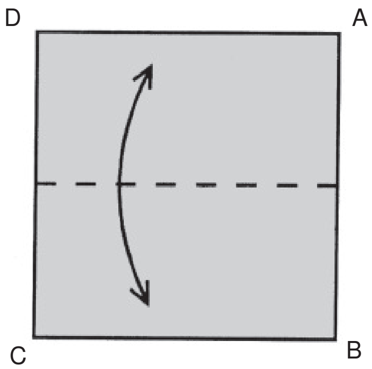

2. बिन्दु A को B पर तथा D को C पर ले आओ। कागज़ बीच से जहाँ मुड़ता हो कसकर दबाओ और खोल लो।

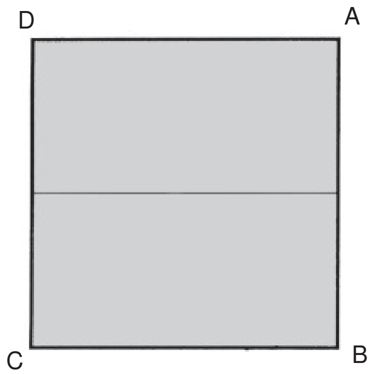

3. कागज के बीचोंबीच एक मोड़ बन गया।

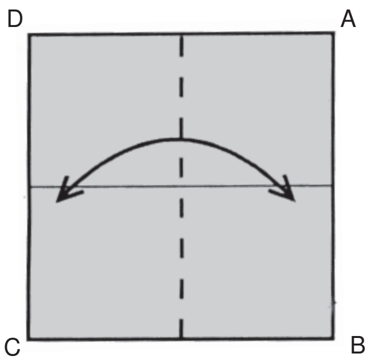

4. अब A कोने को D पर और B को C पर लाओ। मोड़ को पक्का करके खोल लो।

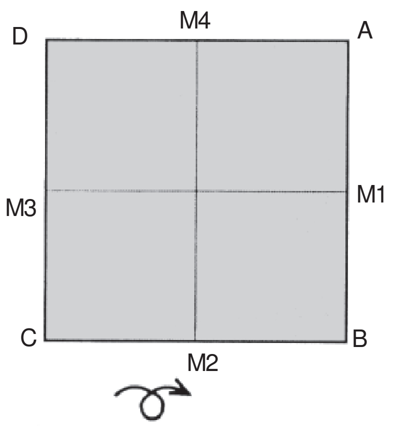

5. एक नया मोड़ बन गया। इन मोड़ो को M1 M3 और M2 M4 नाम दे दो। दोनों रेखाएँ एक–दूसरे को जहाँ काटती हैं उसे O नाम दे दो। कागज़ को पलट लो।

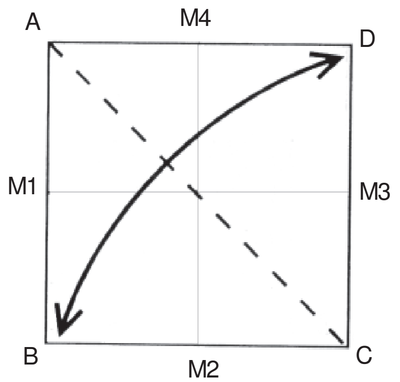

6. B को D पर रखो और पक्का खाई मोड़ बनाकर खोल लो।

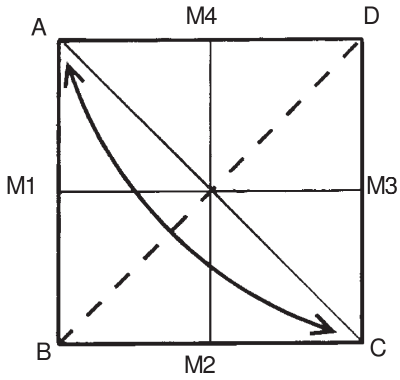

7. वर्ग का एक कर्ण ACबन गया। अब A को C कोने पर ले जाओ मोड़ बनाकर खोल लो।

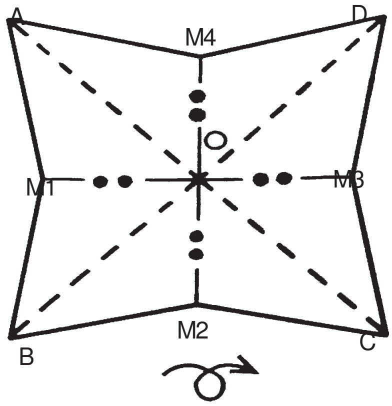

8. वर्ग का दूसरा कर्ण B D बन गया। अब कागज को पलट लो। इस चित्र में तुम देख सकते हो कि कहाँ पहाड़ी मोड़ बने हैं और कहाँ खाई।

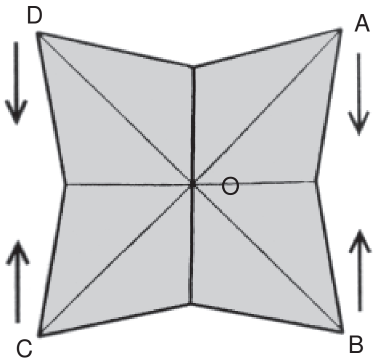

9. अब A, B, C और D में से आमने–सामने के किन्हीं दो कोनों को पकड़कर तीर की दिशा में दबाओ।

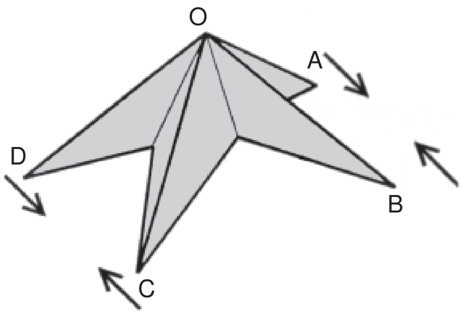

10. इस तरह ।

पानी गेंद आधार आपके द्वारा बनाये जाने वाले ओरगेमी की रीढ़ है। इसको ठीक ढंग से बनाए बगैर आप आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिए इसे बनाने के ढंग को ठीक से समझ लें। यह आधार कई तरीके से बनाया जा सकता है। आप अपना सहज तरीका ढूँढ सकते हैं। यहाँ इसे बनाने का तरीका विस्तार से बताया गया है। इस तरीके से बनाने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। बस यह ध्यान रखना होगा कि मोड़ बिलकुल पक्के बनें। इससे तुम्हारे द्वारा बनाई जा रही आकृति में स्पष्टता आएगी और काम भी आसान हो जाएगा।

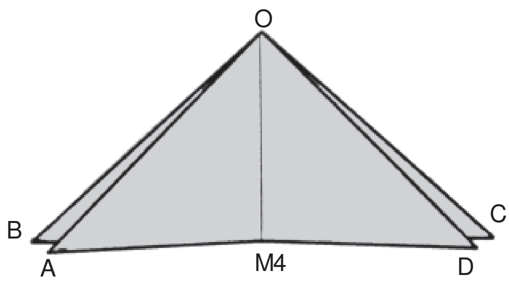

11. बन गया पानी गेंद आधार ।

पानी गेंद आधार के अंग

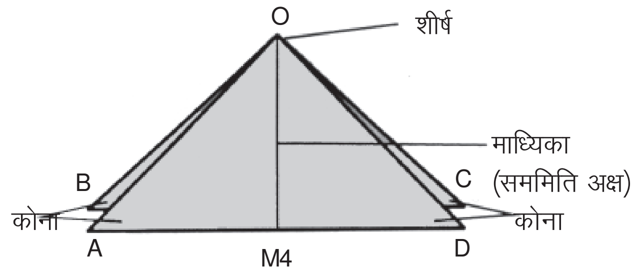

पानी गेंद आधार

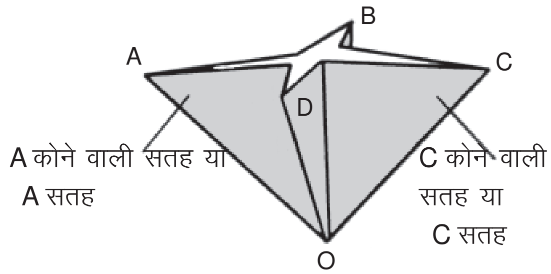

पानी गेंद आधार की फैली हुई चारों सतहें

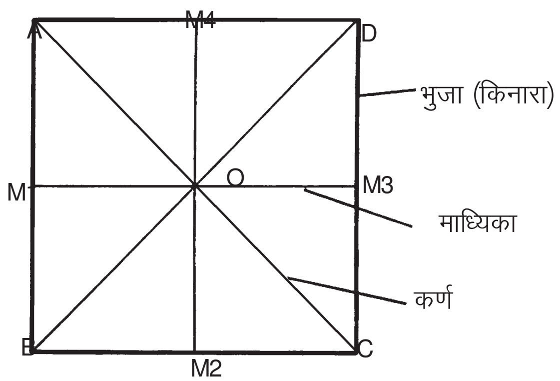

A, B, C, D	कोने
AB = BC = CD = AD	भुजाएँ (किनारे)
M_1, M_2, M_3, M_4	भुजाओं के मध्य बिन्दु
O	वर्ग के केन्द्र
AC = BD	कर्ण (सममिति अक्ष)
M_1 M_3 = M_2 M_4	माध्यिकाएँ (सममिति अक्ष)

सवाल

1. आयताकार कागज से पानी गेंद आधार बन सकता है?

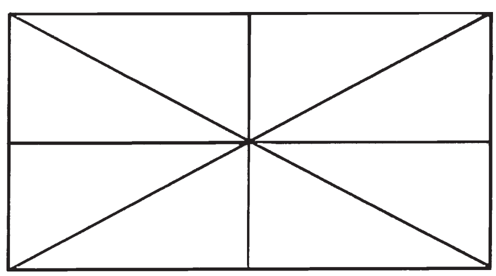

2. छह कोनेवाला पानी गेंद आधार किस तरह बन सकता है?

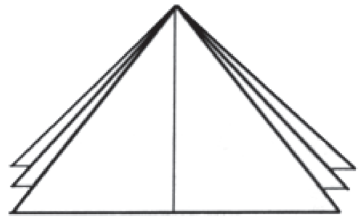

फूल

रंग –बिरंगे फूल भला किसे नहीं भाते ?
लेकिन कागज़ के फूल, चौंक गए न?
वर्गाकार कागज़ से इतने सुंदर फूल बन सकते हैं
कि देखने वाले दाँतों तले उँगली दबा लें ।
तुम भी बनाओं हमारे साथ फूल।

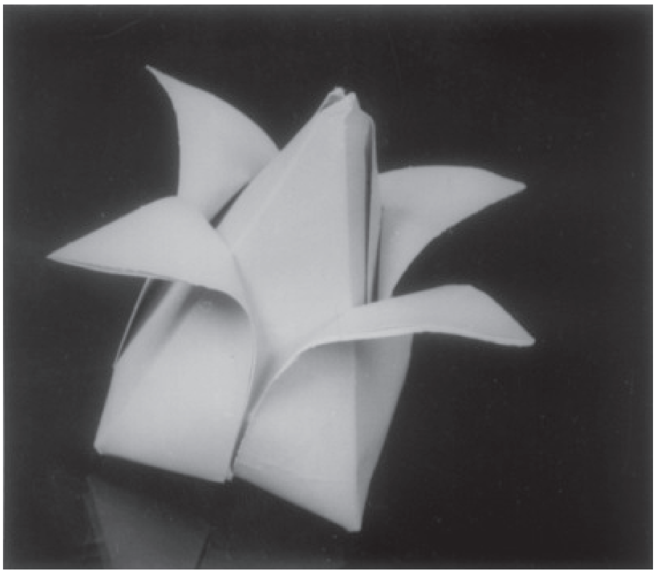

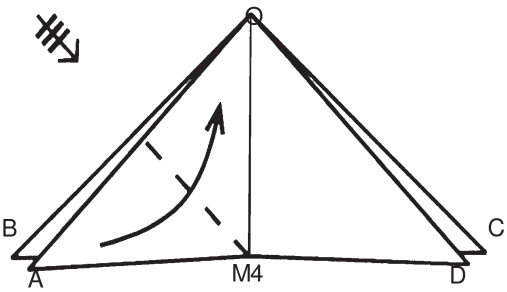

1. पानी गेंद आधार बना लो। A कोने O को बिन्दु पर रखकर खाई मोड़ बना लो। इस प्रक्रिया को बाकी के तीनों कोनों पर भी दोहराओ।

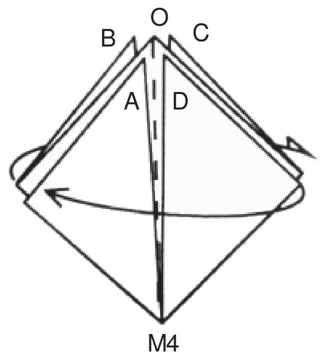

2. चार नए कोने उभर आए। दो ऊपर और दो नीचे। ऊपर के दाएँ वाले कोने को बाईं ओर ले जाओ। नीचे के बाएँ वाले कोने को दाईं ओर ले जाओ।

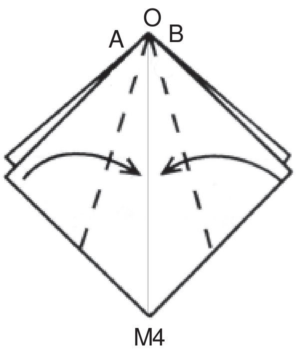

3. D और C कोने वाली सतहों से तिरछे खाई मोड़ बना लो।

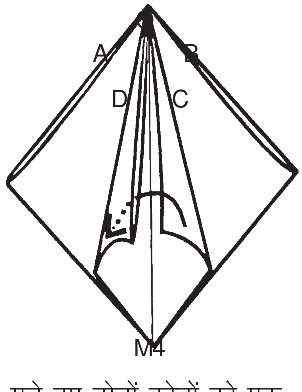

4. मुड़े हुए दोनों कोनों को एक दूसरे में फँसाओ।

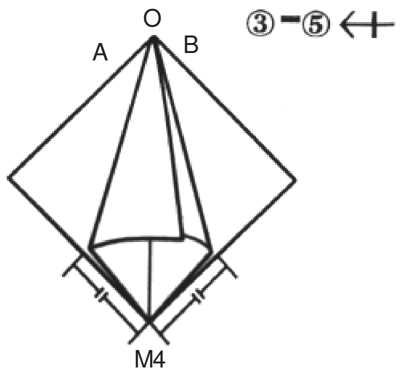

5. कोने एक दूसरे में जहाँ तक जा सकें भर दो। ख्याल रहे कि दोनों कोनों के नीचे की तरफ बची दूरी बराबर रहे। दोनों ओर बराबर दूरी छोड़कर मोड़ पक्के कर लो। आकृति के दूसरी तरफ कदम 3 से 5 तक की प्रक्रिया दोहराओ।

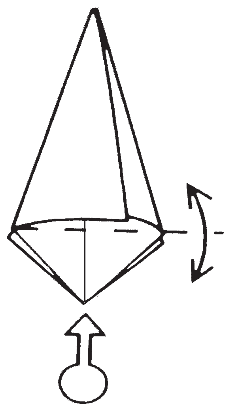

6. आकृति के नीचे के त्रिभुजाकार हिस्से को मोड़कर खोल लो। सुराख से हवा भरकर इसको फुला लो।

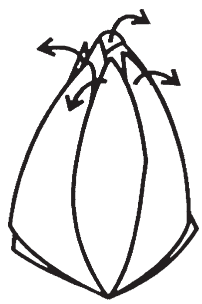

7. केन्द्र O से जुड़े हुए A, B, C और D कोनों को बाहर की तरफ मोड़ लो।

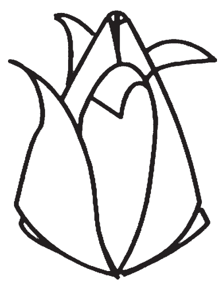

8. चित्र को देखो और याद करो बंद कली को किस तरह से खोलकर तुम फूल बना लेते हो।

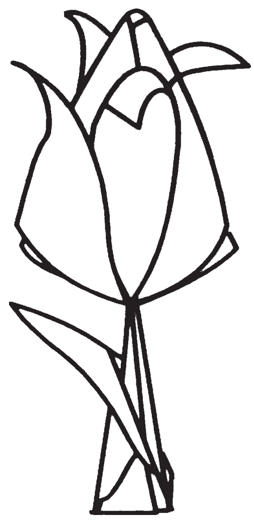

9. इस तरह बनेगा तुम्हारा फूल। सुराख में एक सुंदर डंडी लगा लो।

तुम सोचो

यह फूल कई और तरह से बन सकता है। बीच की कली छोटी, पंखुड़ियाँ बड़ी हो सकती हैं या फिर कली बड़ी और पंखुडियाँ छोटी। दो रंग के कागज़ को मिलाकर रंग–बिरंगा फूल भी बना सकते हो। सोचो कैसे ? और बनाओ।

पानी गेंद

पानी गेंद का मॉडल काफी प्रचलित है। इस पानी बम, घन आदि नामों से भी जाना जाता है। इस मॉडल की लोकप्रियता के कारण ही इसका आधार 'पानी गेंद आधार' भी महत्वपूर्ण हो गया। शुरूआत पानी गेंद आधार से ही करेंगे। पानी गेंद आधार बना लो।

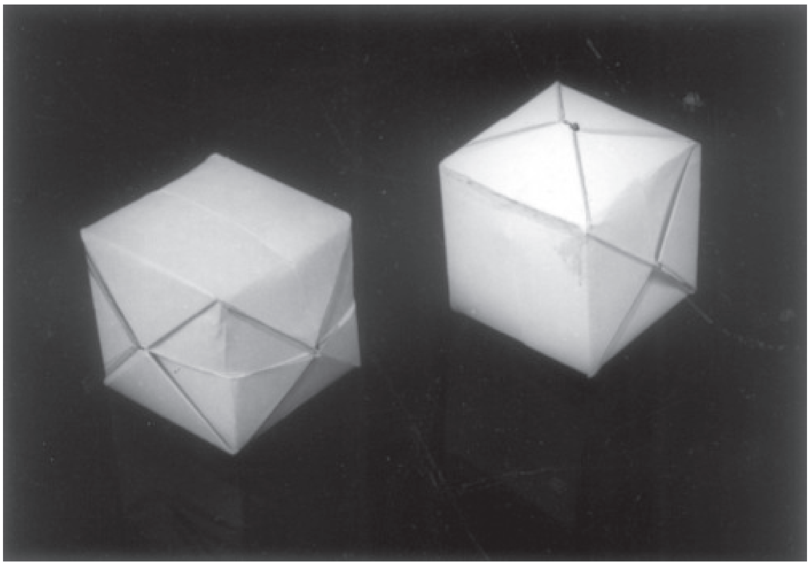

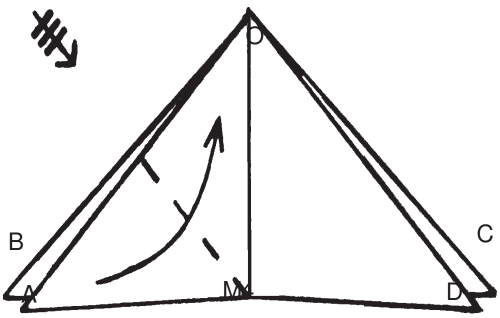

1. A कोने को O बिन्दु पर रखकर खाई मोड़ बनाओं और खोल लो। मोड़ को पक्का कर लो। बाकी तीन कोनों पर भी ऐसा ही मोड़ बनाओ।

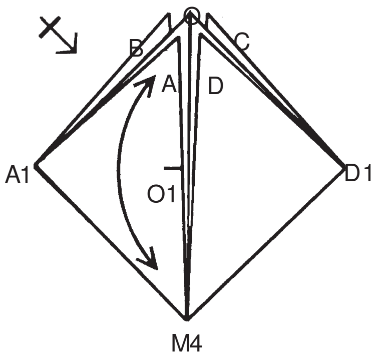

2. A बिन्दु को M4 पर ले आओ। बिन्दु O1 पर मोड़ का सिर्फ निशान ही बनाना है। यह निशान A M4 रेखा का मध्यब्रिन्दु होगा। सामने की सतह पर भी मध्य बिन्दु का निशान बना लो। चित्र में दिख रही आकृति के बाएँ और दाएँ कोनों को A1 और D1 नाम दो।

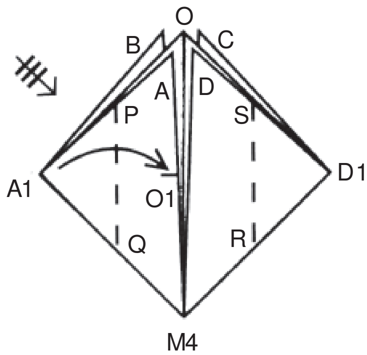

3. अब A1 को O1 तक लाकर मोड़ लो। यही क्रिया बाकी तीन सतहों पर भी दोहराओ।

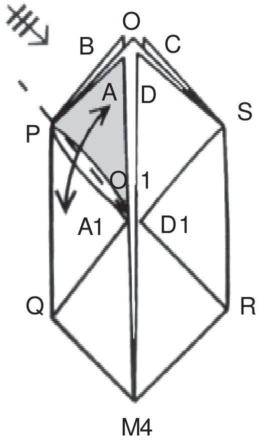

4. इस तरह की आकृति बनेगी। PO1 खाई मोड़ बनाकर खोल दो।

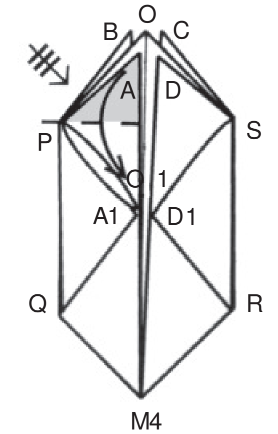

5. A कोने को O1 से मिलाकर खाई मोड़ बना लो। छोटा दोहरा त्रिभुज बन जाएगा। यही क्रिया बाकी तीन सतहों पर भी दोहराओ।

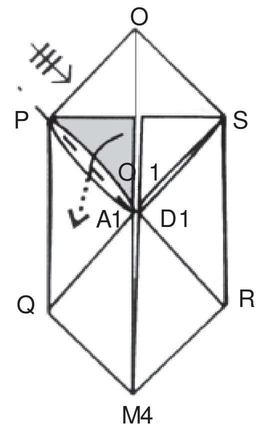

6. कदम–5 में बनाए त्रिभुज को एक बार और PO1 रेखा पर से मोड़ते हुए PA1 पर बनी हुई जेब में ठूँस दो। A कोने की तालाबंदी हो गई।

तालाबंदी की यह प्रक्रिया बाकी तीन कोनों पर भी दोहराओ।

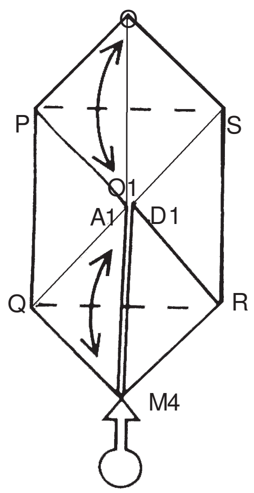

7. PS और QR खाई मोड़ बना लो। निशान पक्के करके इन्हें खोल दो। अब नीचे के सुराख से हवा भर लो।

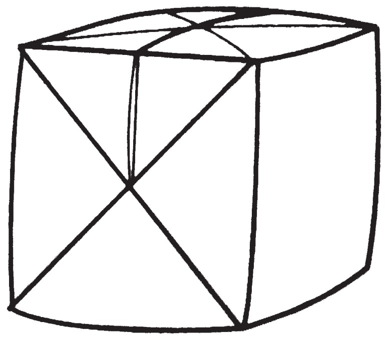

8. पानी गेंद बन जाएगी।

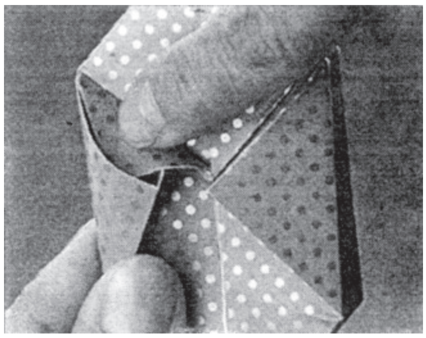

यहाँ ध्यान देने की बात है कि अगर तुम तालाबंदी नहीं करोगे तो कोने खुले रह जाएँगे और गेंद नहीं बन सकेगी।

नोट : ऊपर बताई गई प्रक्रिया के मुताबिक अगर तुम काम करोगे तो तुम्हारी गेंद सुडौल बनेगी। मोड़ अगर सही और पक्के नहीं बने तो गोल–मटोल होकर रह जाएगी।

पानी गेंद को ठीक तरीके से बनाना सीख लो। एक–एक कदम (स्टेप) का ठीक से अभ्यास कर लेना। इसका इस्तेमाल हम आगे की आकृतियों में भी करेंगे।

बदलाव–1
ईंट

पानी गेंद के कदम–2 (पिछले पेज) शुरू करो।

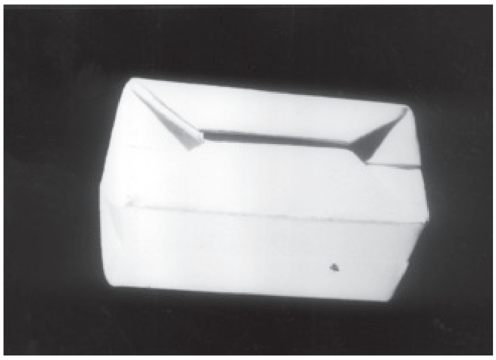

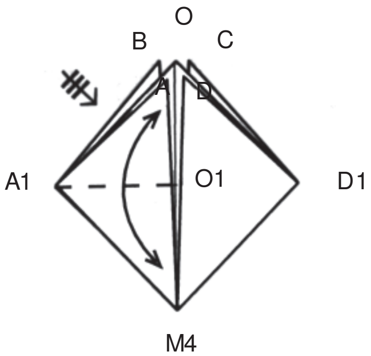

1. A बिन्दु को M4 पर रखकर A1 O1खाई मोड़ बनाकर खोल दो। यह प्रक्रिया बाकी तीन सतहों (B,C,D) पर भी दोहराओ।

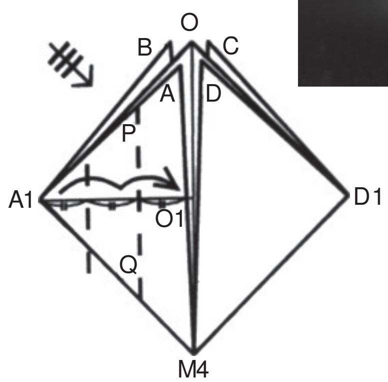

2. A_1O_1 रेखा को अन्दाज से तीन बराबर भागों में बाँट लो। चित्र के मुताबिक कागज को मोड़ो। A सतह के ऊपर जेब बन जाएगी। यही प्रक्रिया बाकी तीन सतहों पर भी दोहराओ।

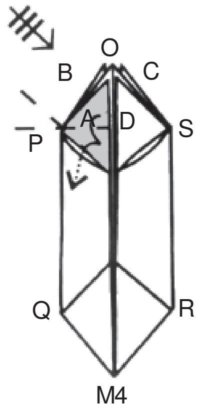

3. चारों कोने (A, B, C, D) ऊपर निकले हुए दिखेंगे। A कोने को पहले आड़ा और फिर तिरछा मोड़कर जेब में ठूँस दो। (तालाबंदी याद है न ?) बाकी तीन कोनों की भी तालाबंदी करो।

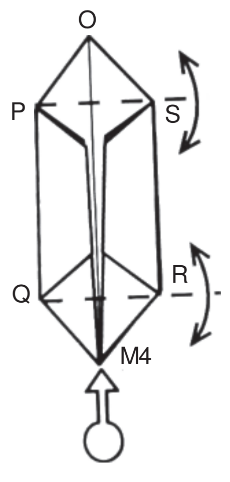

4. P S और Q R खाई मोड़ बनाकर खोल लो। अब सुराख से हवा भर दो।

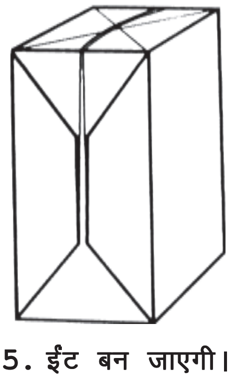

5. ईंट बन जाएगी।

बदलाव –2

आयताकार डिब्बा

ईंट के कदम–2 (पिछले पेज)

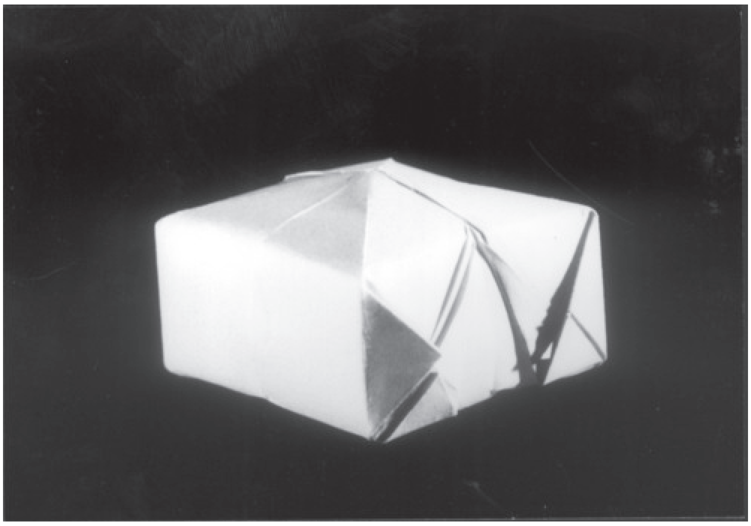

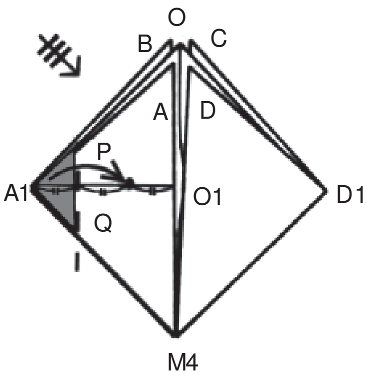

1. A_1 को तीर के निशान तक मोड़ों । बाकी तीन सतहों पर भी यह प्रक्रिया दोहराओं।

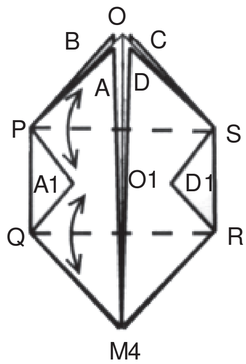

2. P S और Q R खाई मोड़ बनाकर खोलो।

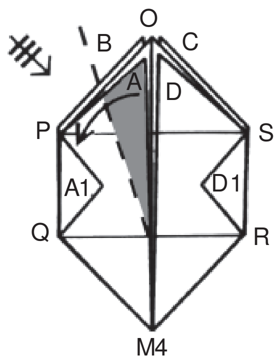

3. A सतह के छायांकित भाग को P A_1 से मिलाकर खाई मोड़ बना लो। यही प्रक्रिया बाकी तीन कोनों पर दोहराओं। चारों कोने ऊपर की तरफ निकले दिखेंगे।

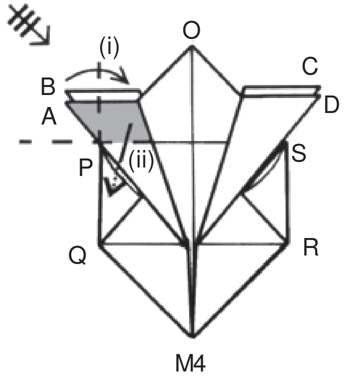

4. A कोने को पहले P बिन्दु से आड़ा और फिर खड़ा मोड़ बनाकर P A_1 पर बनी जेब में ठूँस दो। कोने की तालाबंदी हो गई । इसी तहर बाकी तीन कोनों B, C और D की भी तालाबंदी कर लो।

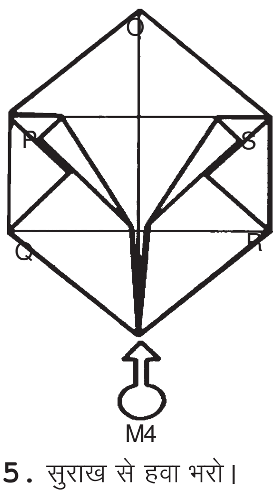

5. सुराख से हवा भरो।

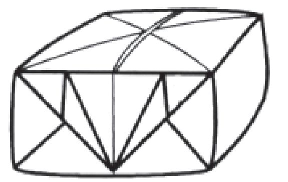

6. आयताकार डिब्बा बन जाएगा।